ज़ंजीरों में हवा

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

ज़ंजीरों में हवा

(मुक्तक-संग्रह)

'साथी' जहानवी

(अजय कुमार शर्मा)

समर प्रकाशन

समर प्रकाशन
64-ए, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर
दूरभाष : 0141-2213700, 98290-18087
ई-मेल : samarprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अजय शर्मा

प्रथम संस्करण : फरवरी, 2020

ISBN : 978-93-88781-23-7

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'

आवरण संयोजन : समर टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 150/-

ZANJEERON MEIN HAWA (MUKTAK)
Written by 'Sathi' Jahanavee (Ajay Kumar Sharma)

धरती माँ,
हर उस जीव,
नदिया व शजर को
जिसकी वज़ह से यह क़ायनात
ख़ूबसूरत, महफ़ूज़ व ख़ुशहाली से आबाद है

और

माँ की निस्वार्थ
ममता, करुणा, स्नेह,
वात्सल्य और इन्सानियत
जो किसी भी मज़हब, धन दौलत
लोभ लालच और दीनो ईमान से परे हैं

मेरी क़लम से मेरे ख़यालात

पूर्व में 18 काव्य संग्रहों के विमोचन के बाद अब एक ग़ज़ल संग्रह 'ख़ुद को बहुआयें', दो रूमानियत मुक्तक संग्रह 'जंजीरों में हवा', 'अज्ञातवास', सात छन्द मुक्त कविता संग्रह 'इलाज ही बीमार', 'दो मिनट का मौन', 'एकलव्य का अँगूठा', 'जीवन ही जेल', 'चुल्लू भर पानी में', 'गिरेबान में झाँक कर', 'रोटी में भूख' प्रकाशित कराने की ओर अग्रसर हूँ।

लिखना और पढ़ना मेरे लिये एक नियमित दैनिक प्रक्रिया है इसलिये इतना कुछ लिखने का मुश्क़िल काम सहजता और सरलता से मेरे लिये बहुत आसान रहता है। लिखने के लिये मुझे कोई विशेष मेहनत नहीं करनी पड़ती। नियमित दैनिक दिनचर्या में जो पढ़ता, देखता, सुनता, समझता और सहन करता हूँ उसको ही कुछ अलग संवेदनशील तरह से सोच कर लिखना ही मेरे लिये एक रचना कर्म है। जो कभी ग़ज़ल में तो कभी मुक्तक तो कभी कविता के रूप में आकार लेकर साकार होता है। रचनाओं की विषय वस्तु में अक्सर संवेदनशील करुणा के साथ व्यंग्य होता है। क्योंकि:-

मैं जब ख़ुद के भीतर जाता हूँ
तब तो मैं ख़ुद भी तर जाता हूँ
ख़ुद ही ख़ुद को लायक समझ
मुश्क़िल भी आसाँ कर जाता हूँ

मुझे साहित्य की किसी भी विद्या की कोई विशेष जानकारी नहीं है इसलिये मैं अपने आपको साहित्यकार नहीं मानकर एक मेहनती और ईमानदार रचनाकर्मी मानता हूँ। इसलिये इन रचनाओं को व्याकरण के दृष्टिकोण से परखना उचित नहीं होगा। क्योंकि:-

मैं तो वैसा भी नहीं, मैं तो उनके जैसा भी नहीं
मैं जैसा भी हूँ वैसा ख़ुद को हाज़िर कर रहा हूँ

इन काव्य संग्रहों की रचनायें रहस्य और छायावाद में न होकर इन रचनाओं की विषयवस्तु, सोच और शब्दों का चयन इस प्रकार किया गया है कि स्पष्टवादिता से समाज का हर वर्ग, किसी भी उम्र का इन्सान इन रचनाओं को आसानी से समझ ले और उसको अपने अहसास और जज़्बात, ख़्वाब और ख़याल इन रचनाओं में मिले क्योंकि इन रचनाओं की विषय वस्तु व्यक्तिगत नहीं होकर समग्र समाज का चिन्तन और मनन का दृष्टिकोण है। क्योंकि:-

जिसमें मिला उसी रंग का हो गया
पानी का यही रंग तो हिन्दुस्तानी है

बहुत कुछ ऐसा होता है जो आँखों ने देख तो लिया, नज़रों में आकार, साकार भी हो गया, अहसास और महसूस भी कर लिया मगर कहने और लिखने के लिये शब्द नहीं होते। वैसे भी बहुत कुछ ऐसा भी लिखने में आ जाता है जो कल्पनाओं से परे की सच्चाई होते हैं। कई बार सामान्य सी विषय वस्तु पर भी बहुत कुछ बहुत अच्छा लिखने में आ जाता है तो कई बार बहुत अच्छी विषय वस्तु पर भी कुछ भी लिखने में नहीं आता है। कुछ भी नहीं लिख पाना या बहुत कुछ लिख जाना यह सब मनोस्थिति पर निर्भर करता है। कुछ तहरीरें पत्थरों पर लिखी हुई तहरीर जैसी होती है जो समय के साथ धूमिल होकर मिट जाती हैं मगर कुछ तहरीरें दिलो दिमाग़ में असर कर जाती हैं वो लिखी हुई नहीं होकर भी कभी नहीं मिटती। क्योंकि:-

आँखों के पास कहने को ज़ुबान नहीं
ज़ुबान के पास आँखों के बयान नहीं
न तो कानों सुनी और न आँखों देखी
कोई सच दिले आवाज़ के समान नहीं

इन रचनाओं में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, मानसिक राजनैतिक और सरकारी विसंगतियों, कुरीतियों, जातिवाद, छुआछूत, लिंग भेद, क़ानून व्यवस्था, ख़ुदग़र्ज़ी, बेईमानी, चालाकी, मक़्क़ारी, ज़ुल्मो सितम, अपराध, बेरोजगारी, बनावटी रिश्ते, ईर्ष्या, रंजिश, नफ़रत, धार्मिक उन्माद, देश द्रोह, आंतकवाद, चोरी, हत्या, जमाखोरी, मुनाफाखोरी, रिश्वत, बालश्रम, यौन शौषण इत्यादि बुराईयों पर आसान

शब्दों और सामान्य सोच के साथ व्यंग्य करके आम आदमी को समझाने की कोशिश की गई है। क्योंकि:-

जब ज़ुबान से लफ़्ज ख़ामोश हो जाये
ख़ामोश निगाहों का फिर आवाज़ होना

मैं हर उस जीव जन्तु और हर उस जर्रे-जर्रे का बहुत आभारी हूँ जो मेरी इन संवेदनशील रचनाओं की विषय वस्तु बने हैं। उम्मीद है कि आपको ये रचनायें पसन्द आयेंगी। आशा ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्वास है कि आप अपने अनमोल विचारों से इस तुच्छ रचनाकर्मी को अवश्य अवगत करायेंगे। ताकि भविष्य में इन सुझावों पर ध्यान दिया जा सके। इन रचनाओं से अगर किसी का तन-मन, दिलो दिमाग़ आहत होता हैं तो मैं इसके लिये अग्रिम क्षमा प्रार्थी हूँ। क्योंकि:-

वैसे तो मैं चलायमान समय हूँ 'साथी'
हँसते और हँसाते गुज़रे तो आसान हूँ

इन रचनाओं को काव्य संग्रह के लायक बनाने में जो अनमोल सहयोग श्री भगवत सिंह जादौन 'मयंक', श्री भगवती प्रसाद पंचौली और श्री शम्भू दयाल विजय ने किया है उसके लिये मैं उनका बहुत-बहुत आभारी हूँ। इस मुक्तक के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

ज़माने ने पाग़ल समझ कर खारिज़ कर दिया
उनके पाग़लपन ने ही उन्हें वाज़िब कर दिया
इल्म व हुनर का एक वही तो बेताज बादशाह
जिसने वास्ते इल्म अपने को जाहिल कर दिया

तहेदिल से आपका अपना

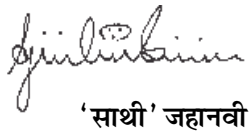

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

आपके लिए

दस्ते तन्हाई हो गया आपकी कुर्बत के लिए
क्या इतने ग़म काफी नहीं मुहब्बत के लिए
यही सोच कर रोज़ अश्क़ पीता रहा चुपचाप
आख़िर ज़िन्दा भी है आपकी हसरत के लिए

आपकी वज़ह से

वो कुछ तो बेवज़ह ख़फ़ा से है
ज़िन्दगी बहुत कुछ ज़फ़ा से है
मेरे जीने औ मरने की कोशिशें
सिर्फ़ ये आपके लिये वफ़ा से है

अगर वो चाहे तो

अगर वो चाहे तो दरिया में डुबा दे
वो चाहे तो समंदर को पार करा दे
ताउम्र रहूँगा ख़ुदा तेरा शुक्र गुज़ार
अगर उन्हें मेरा विसाले यार करा दे

---

1. कुर्बत=नजदिकियाँ **2.** हसरत=इच्छा **3.** विसाले यार=मिलने वाला महबूब

हसीन मुहब्बत

मेरे दिल व दिमाग़ की जो बेख़याली है
तुम्हारी सूरत व सीरत ने बना डाली है
वाइज़ भी कर ले जब मस्ज़िद से तौबा
हसीन शबाब में ख़ुश्बू ऐसी मतवाली है

ऐसे जीता हूँ मैं

ऊपर से बर्फ़ जैसा पहाड़ लगता हूँ मैं
अन्दर से सुलगता सहरा लगता हूँ मैं
अपने आप पे यक़ीन नहीं करता हूँ मैं
ज़िन्दगानी से ज़बरदस्ती करता हूँ मैं

दिल का असर

आँखों से रोने पर दिल को रोना ना आया
दिल रोया तो समन्दर में तूफ़ान सा आया
अश्क़ दामन को तर-बतर भी न कर सके
दिल का नासूर ज़िन्दगानी को डुबा आया

---

1. सीरत=योग्यता **2.** वाइज़=धर्म गुरू **3.** सहरा=रेगिस्तान

कुछ भी करने नहीं देते

ख़्वाहिशे दीदार चराग़ों को बुझने नहीं देती
बेचैन उदासियाँ सहर को सँवरने नहीं देती
दिल और दिमाग़ में यादे इस तरह बसी हैं
तन्हाइयों के तहख़ाने से निकलने नहीं देती

दिल में बसा ले

एक अलग तरह से दुनिया को दिल में बसा ले
करके इश्क़ ग़मो तन्हाइयों को दिल में बसा ले
मन्ज़र दर मन्ज़र बनते हैं, ज़िन्दगी के सफ़र में
ज़िन्दगी समझ इस मन्ज़र को दिल में बसा ले

बहुत कुछ हो जाये

ज़िन्दगानी को जीने का बहाना मिल जाय
अगर मुझको तुम्हारा मुस्कुराना मिल जाय
हो जाय हमारी कुछ हस्ती इस दुनिया में
अगर तेरी आँखों में आशियाना मिल जाय

---

1. ख़्वाहिशे दीदार=मिलन की इच्छा **2.** सहर=सुबह

बहुत पछताओगे

तमन्नायें पूरी करलो दिल भरकर
कोई भी वापस आता नहीं मरकर
इश्क़ है तो आज इज़हार कर दो
फिर पछताओगे सितमग़र बनकर

दास्ताने इश्क़

मेरे तन्हा वक़्त के तुम ख़ास राज़दार
तुम्हारी यादों में बहते अश्क़ लगातार
जब भी तुम्हारा तसव्वुर आया मुझको
दिल और दिमाग़ हो जाता है बेक़रार

मुहब्बत का फ़लसफ़ा

जो अपने दिल का ही वफ़ादारी है
ख़ुशनुमा ज़िन्दगी का अधिकारी है
दिमाग़ से जब तक बगावत नहीं करे
प्यार में फिर कहाँ से ईमानदारी है

---

1. इज़हार=कहना **2.** सितमग़र=जालिम **3.** तसव्वुर=ख़याल

बेबस मुहब्बत

आज मुहब्बत को छिपाने की लाचारी है
एक बार फिर बेआबरू होने की बारी है
ख़्वाबों की ताबीरें सच भी हो सकती है
ग़र ख़्वाबों के लिये दिली ज़वाबदारी है

दीवानगी के मन्ज़र

मज़ार पे आना होगा काले हिज़ाब में
अभी आ जाओ लिबास-ए-गुलाब में
मत सताओ बेबस लाचार दीवाने को
ज़िन्दगी तबाह हो जायेगी अज़ाब में

बेपनाह दीवानगी

फाँसी का फंदा लिए तैयार जमाना बेताब में
मुहब्बत ज़िन्दाबाद है रुसवाई के इंक़लाब में
और क्या फ़लसफ़ा चाहता है मेरी उल्फ़त से
अफ़साने लिखे जायेंगे दीवानों की किताब में

---

1. ख़्वाबों की ताबीरें=स्वप्न फल **2.** हिज़ाब=घुंघट, लिबास=वस्त्र **3.** अज़ाब=अभिशाप **4.** रुसवाई=बदनामी **5.** फ़लसफ़ा=चिन्तन **6.** उल्फ़त=प्यार **7.** अफ़साने=कहानी

दिल का असर

आँखों से रोने पे दिल को कैसे सवाब आया
दिल रोया तो फिर ज़िन्दगी में अजाब आया
निकल भी पड़े अश्क़ तो बेसबब झुलस गये
दिल की आह में तो शोलों का जवाब आया

ऐसा ही करते जायेंगे

जैसे-जैसे आप बताते जायेंगे
शख़्सियत वैसी बनाते जायेंगे
रिश्ता कैसा औ कितना गहरा
ये बताते जाइये निभाते जायेंगे

ऐसा ही करते जायेंगे

आपके जज़्बात सुनते जायेंगे
दीवाना वैसे ही बनते जायेंगे
जैसे हालात बताना चाहते हो
दिली ज़ुबान से सुनते जायेंगे

---

1. सवाब=पुण्य **2.** अजाब=अभिशाप **3.** बेसबब=बिना वजह

ऐसा ही करते जायेंगे

नरम बिस्तर पर सलवटें गिनते जायेंगे
आँखों आँखों में रत जगे करते जायेगें
सिर्फ़ मिलने का नाम ही तो इश्क़ नहीं
तन्हाई व जुदाई से इश्क़ करते जायेंगे

फिर क्या करता

मुहब्बत-ए-इज़हार न करता तो क्या करता
मुहब्बत को महफ़ूज़ न करता तो क्या करता
आशियाने में वीरानी औ बेचैनियाँ आबाद थी
ख़यालातों में, गुफ़्तगू न करता तो क्या करता

यह क्या हो गया

तुम्हारी आँखों ने क्या शरमाना छोड़ा
ज़िन्दगानी में क़यामत ने आना छोड़ा
ज़न्नत औ ख़ुदा से भी हो जाये तौबा
तुमने किसी को बना के दीवाना छोड़ा

---

1. मुहब्बत-ए-इज़हार=प्यार प्रकट करना **2.** गुफ़्तगू=बातचीत

हालात-ए-इश्क़

ग़र तुम्हारे ख़्वाबों की ताबीरें सोचूँ
ग़म औ तन्हाइयों की ताज़ीरें सोचूँ
वक़्त-ए-क़यामत का अहसास हो
इज़हार-ए-इश्क़ की तामीरें सोचूँ

ऐसा क्यों नहीं होता

ख़यालों में ग़मों का कोई भी सहारा नहीं होता
उफनती दरिया में क़श्ती का किनारा नहीं होता
ग़म के अब्र को वक़्त की हवा बरसने नहीं देती
मगर वक़्त का हसीन मिज़ाज हमारा नहीं होता

हसरत-ए-यार

इस तरह जी भी न पाऊँ तो मर भी ना पाऊँ
अगर तुझ को पाऊँ तो गुलशन महकता पाऊँ
तुझे चाहा है इस क़दर ता-उम्र चाहता रहूँगा
तेरी चाहत में दर्दनाक मौत ही क्यों ना पाऊँ

---

1. ख़्वाबों की ताबीरें=स्वप्न फल **2.** ताज़ीरें=कष्ट **3.** तामीरें=सृजन

ये क्या कर डाला

गैरज़मानती ज़ुर्म संगीन कर डाला
बेपनाह चाहतों का ख़ून कर डाला
बेवफ़ाई कर के मुहब्बत के यार से
दिलो दिमाग़ को बेचैन कर डाला

क्या करने लगे

आप को हम आप से क्या हरने लगे
ख़ुद-बख़ुद ग़मे दरिया में डुबने लगे
यह कायनात बेख़बर सी लगने लगी
जब हम मुहब्बत की बातें करने लगे

ऐसा भी होता हैं

तुम्हारी हर इक अदा भी, दिलफ़रेब होती है
ख़ामोशी और तन्हाई भी, महकी हुई होती है
अज़ीबो ग़रीब हैं तुम्हारी क़यामत का सलीक़ा
न ख़ूँ-ख़राबा होता न दर्द की आह होती है

---

1. कायनात=संसार

जमाल तेरे हुस्न का

जुल्फें लहराई तो लगा पुरवाई घटा छा गयी हो आसमाँ में
ख़ूँ रंग की चुनर लहराई लगा बिजली चमकी हो आसमाँ में
चेहरे से घुंघट हटाया तो लगा चाँदनी छा गई हो फिजा में
देखकर तेरा यह करिश्मा चाँन्दनी शरमा गयी हो आसमाँ में

ज़िन्दगी क्या हो गई

याद करते-करते आँखों में ही सहर हो गई
दिल के आशियाने में यादों की बसर हो गई
तू घर कर गई जिस तन्हा मुक़ाम पर जाकर
वह मन्ज़िल हर किसी की राहे सफ़र हो गई

करिश्मा तेरा कभी-कभी

चले बादे सबा तुम्हारे क़ैफ़ियत की कभी-कभी
सुहावनी सहर भी, हया हो जाती है कभी-कभी
तुम्हारी तब्बसुम नहीं होकर ग़ुले गुलाब की हो
जो निकला करती है तुम्हारे लब से कभी-कभी

---

1. जमाल=सौन्दर्य 2. सहर=सुबह 3. बादे सबा=सुहावनी सुबह 4. क़ैफ़ियत=प्रवृत्ति 5. हया=शर्म 6. तब्बसुम=मुस्कराहट 7. गुल=फुल 8. लब=होंठ

कुछ तो करो

यादों से वो दूर जाते भी नहीं
दिल से जख़्म मिटाते भी नहीं
अब और क्या इम्तहां बाकि है
फिर क्यूँ प्यार जताते भी नहीं

कुछ तो करो

मेरी तहक़ीकात कराते भी नहीं
आँखों से अश्क़ बहाते भी नहीं
बहुत कुछ हो गया है अब तक
आख़िरी साँसें गिनवाते भी नहीं

कुछ भी न कर सके

हम उनसे इज़हारे-मुहब्बत भी कर न सके
मज़बूरी में दिल से बग़ावत भी कर न सके
हर वक़्त ज़ेहन में तसव्वुर रहता है जिनका
उनसे बेवफ़ाई की शिकायत भी कर न सके

---

1. तसव्वुर=ख़याल

क्या हाल होता

घूँघट में चेहरा छुपा हुआ ज़नाब का
वरना ये मिजाज़ न होता माहताब का
हैरत की निग़ाहों से देखा जिस शै को
क़मबख़्त करिश्मा था उनके शबाब का

क्या ख़ूब सितम है

गुलशन के दामन से ख़ुश्बू-ए-गुल जुदा हुई है लोगों
दिल के आशियां में बस्ती-ए-ग़म आबाद हुई है लोगों
कभी थी दिवाली सी राते, आज क़तरा-ए-नूर भी नहीं
अज़ीबो ग़रीब सी बात हमारे आशियाने में हुई है लोगों

क्या ख़ूब दम निकला

मेरी उल्फ़त में ख़ूब निकला है दम
जुदा होने से पहले निकला है दम
जिसे चाहा मैंने उसे चाहते है सब
इसी पर दोस्तों का निकला है दम

---

1. माहताब=चाँद **2.** शै=वस्तु **3.** क़तरा-ए-नूर=प्रकाश की किरण **4.** उल्फ़त=प्यार

क्या यही प्यार है

प्यार करना और उसे निभाने के वादे करते रहना
अपने दिल को समझाने के सौ बहाने करते रहना
मुहब्बत की ज़िन्दगानी औ कामयाबी की तमन्नायें
दस्ते सहरा में महकी हुई सहर की चाहत रखना

क्या-क्या हो जाता है

मुझसे जाने कहाँ ख़ता हो जाती है
मेरी रुह बदन से जुदा हो जाती है
बहुत मुश्क़िल है दिल को समझाना
उनकी नज़र जब ख़फ़ा हो जाती है

क्यों ऐसा किया जाता है

दर्दो ग़म की आँच में दिल तो जला जाता है
फिर भला रोज़ क्यों दिलों को तोड़ा जाता है
होंगे पैर जख़्मी जो ऐसा ही तसव्वुर रहे तुम्हें
तो क्यूँ काँटों की राह में सफ़र किया जाता है

---

1. दस्ते सहरा=रेगिस्तानी जंगल **2.** सहर=सुबह **3.** ख़ता=गलती **4.** ख़फ़ा=नाराज **5.** तसव्वुर=ख़याल

चाहत

हक़ीकत में वही तो चाहता है
जो कुछ भी तो नहीं चाहता है
जो सब कुछ पाना चाहता है
वही कुछ देना नहीं चाहता है

मज़बूरियाँ

मुहब्बत की दरिया उफान पर है
जज़्बातों की लहरे तूफ़ान पर है
दिल को चैन औ सुक़ून कहाँ से
तन्हाईयाँ ख़तरे के निशान पर है

मिल्कियत तेरी

फिज़ा का महकना तेरे सिवा कुछ भी नहीं
ज़िन्दगी तेरे दामन के सिवा कुछ भी नहीं
नौखेज़ बहारों से गुलशन का महकना क्या
जो है वो तेरी जुल्फ़ों के सिवा कुछ भी नहीं

---

1. दरिया=नदी **2.** मिल्कियत=सम्पत्ति **3.** फिज़ा=वातावरण **4.** नौख़ेज़=नई

मुहब्बत में क्या हो जाये

हम दोनों के सवाल एक जवाब हो जाये
हसीं लम्हों की ग़ुफ़्तगू लाजवाब हो जाये
मुहब्बत के इज़हार और इसरार का वक़्त
मेरी ज़िंदगी की मुक़म्मल किताब हो जाये

मुहब्बत का असर

सुहानी बरसात की रात में
हम और तुम तन्हा रात में
शाम ढले मन को भटकाये
गुज़िश्ता यादों की बरात में

मुहब्बत का असर

तन्हा वक़्त की ख़िदमात में
मुहब्बत महकती ज़ज्बात में
जुदाई में बेख़ुदी का आलम
बेक़रारी रहती ख़यालात में

---

1. ग़ुफ़्तगू=बातचीत **2.** इसरार=आग्रह **3.** मुक़म्मल=सम्पूर्ण **4.** गुज़िश्ता=गुज़री हुई **5.** ख़िदमात=सेवा **6.** बेख़ुदी=बेसुद

मुहब्बत मुझमें

मुहब्बत के चराग़ रोशन मुझमें
जलने को बेताब परवाना मुझमें
वक़्त बेवक़्त मेरा मुस्करा जाना
बेसबब चाहतों का वजूद मुझमें

मुहब्बत मुझमें

मुहब्बत में मस्त एक दीवाना मुझमें
शमा पे जलता हुआ परवाना मुझमें
बेख़ुदी ऐसी की ख़ुदा भी कुछ नहीं
तुम्हारी दीवानगी का मस्ताना मुझमें

मुहब्बत हाथों में

उनकी यादों के मेले हाथों में
तन्हा रत जगे सवेरे हाथों में
बेचैन, उदास करवटें रातों में
बिस्तर की सिलवटें हाथों में

---

1. बेख़ुदी=अपने आप में मग्न

मुहब्बत का फलसफ़ा

क्या मुहब्बत में इस क़दर कोई दिवाना हो जाता है
उसका ख़ास अपना भी प्यार में बेगाना हो जाता है
न तो ख़ुद का अहसास रहता है और नहीं वक़्त का
बेख़ुदी में मुहब्बत का ख़यालात मस्ताना हो जाता है

बेबस मुहब्बत

दीदारे सनम को तरसती है अंखियाँ
कितनी सितमग़र हो जाती है दूरियाँ
हज़ारों क़ोशिशें करने के बावजूद भी
हमारे सामने आ जाती है मज़बूरियाँ

बेक़रार इश्क़

मेरा दिल भी तो कितना नादान है
मेरी बर्बादी का मुक़म्मिल सामान है
क़त्ल होना है मुहब्बत की राहों में
फिर भी कहाँ मानता यह शैतान है

चाहत के सबूत

क्या मेरे इश्क़ जैसा सख़्त कोई और है
घौंसला गिरा दे वो दरख़्त कोई और है
मुहब्बत आबाद रहेगी हमेशा वफ़ाओं से
नहीं तो इश्क़ में आबाद ज़ीस्त कोई और है

दास्ताने इश्क़

उसकी नज़रों में मेरा अक़्स कोई और है
उसके दिल व दिमाग़ में शख़्स कोई और है
मेरी हकीक़त कुछ और उसकी नज़रों में
उसके ख़यालात में रहता रक़्स कोई और है

दिल की बेबसी

प्यार का क़त्ल करने की लाचारी है
मेरी मज़बूरियाँ ही तो मेरी कटारी है
जुदाई-तन्हाई क़यामत से कम नहीं
तड़पकर जीना भी तो अत्याचारी है

---

1. सहरा=रेगिस्तान **2.** दश्त=जंगल **3.** दरख़्त=पेड़ **4.** मुक़्मिल=सम्पूर्ण **5.** अक़्स=प्रतिबिम्ब **6.** रक़्स=नृत्य

दिवानगी के हालात

मुहब्बत की दरिया उधर भी उफान पर है
उल्फ़त का समन्दर इधर भी तूफ़ान पर है
दोनों अपने-अपने साहिल पे मज़बूर है कि
क़श्तियाँ दोनों की ज़माने के निशान पर है

दीवानगी की इन्तहा

वह मेरा सब कुछ होना चाहता है
इस चाहत में सब खोना चाहता है
भूल कर सारे अपने रन्ज और ग़म
मुझसे गले मिलकर रोना चाहता है

समझदार मुहब्बत

रूठे हुये को मनाना एक कलाकारी है
बहस के वक़्त चुप रहना समझदारी है
कहाँ ज़रूरत है सबूतों और ग़वाहों की
याद में बहते हुये अश्क़ ही वफ़ादारी है

---

1. दरिया=नदी **2.** उल्फ़त=प्यार **3.** साहिल=किनारा **4.** इन्तहा=हद

इश्क़ में ऐसा भी होना था

ख़यालों में दिल और दिमाग़ से ग़मगीन रहता है
लाचारी और मज़बूरी में अपने से तौहीन रहता है
ख़ौफ़नाक जानलेवा जुदाई के हालात औ माहौल
ज़ालिम तन्हाई का वक़्त तो जुर्म संगीन रहता है

मुहब्बत का फलसफ़ा

क्या मुहब्बत में इस क़दर कोई दीवाना हो जाता है
उसका अपना भी प्यार के लिये बेग़ाना हो जाता है
चेहरे की रंगत, फ़ितरत और क़ैफ़ियत बदल जाती है
जब मुहब्बत में दिलो दिमाग़ आशिकाना हो जाता है

मुहब्बत का सिला

मुझको मेरी मुहब्बत का यह क्या सिला मिला
आँखों में रात गुज़रने का ये सिलसिला चला
चाहा था कि सफ़र कट जाये हँसते मुस्कराते
लगा दिया मगर ग़मों और तन्हाईयों का मेला

---

1. तौहीन=अपमानित **2.** संगीन=ख़तरनाक **3.** फलसफ़ा =चिन्तन **4.** बेग़ाना=पराया **5.** फ़ितरत=सोच **6.** क़ैफ़ियत=प्रवृति

मुहब्बत के अन्ज़ाम

दर्दो ग़म के अश्क़ और यह विरानियाँ
ज़ीस्त को दुश्वार करती यह बेचैनियाँ
जुदाई और तन्हाई के दर्द औ ग़म में
बहते अश्क़ होते प्यार की निशानियाँ

मुहब्बत के मन्ज़र

यादों में अश्क़ों का बहना अलामत मेरी मुहब्बत के
फ़कत ऐसे ही हालात हैं मेरी कायनाते उल्फ़त के
तवील रातें करवटें बदल-बदल के कटा करती हैं
यक़ीनन वह तसव्वुर करता होगा मेरी क़यामत के

मुहब्बत की सज़ा

फिर से वही कहानी दोहराई जा रही है
दिल लगाने की सज़ा बताई जा रही है
मुहब्बत की शमा रोशनी से आबाद रही
दास्ताँ तो परवाने की सुनाई जा रही है

---

1. सिला=ईनाम **2.** ज़ीस्त=ज़िन्दगी **3.** अश्क़=आँसू **4.** दुश्वार=मुश्क़िल **5.** अलामत=प्रतीक **6.** फ़कत=सिर्फ़ **7.** कायनाते उल्फ़त = प्रेम का संसार **8.** तवील=लम्बी **9.** तसव्वुर=ख़याल **10.** क़यामत=आख़िरी दिन

मुहब्बत के इनाम

दुनिया में क्या होता है हमें ख़बर नहीं होती
बस इक दर्द रहता, दर्द की आह नहीं होती
दीदारेयार की तमन्ना में खोया सा रहता हूँ
बिना कुछ खोये, कुछ भी हासिल नहीं होती

मुहब्बत और हम

दर्दे मुहब्बत को इस मानिंद पाकर चले हैं हम
दिल को दश्त-ए-तन्हाई सा कर चले हैं हम
बहती रही दरिया अपने क़यामत के सफ़र से
साहिल पर तन्हा-तन्हा चल कर चले हैं हम

मुहब्बत और हम

हर चाहत को तुझ पे क़ुर्बान कर चले हैं हम
बस चाहत तेरी उल्फ़त की लेकर चले हैं हम
जो हासिल किया हैं वह फ़कत तेरा प्यार है
वरना तो मौत को तीमारदार कर चले हैं हम

---

1. दीदारे यार=महबूब के दर्शन **2.** हासिल=प्राप्त होना **3.** मानिन्द=तरह **4.** दश्त-ए-तन्हाई=तन्हाई के जंगल **5.** साहिल=किनारा

नादान इश्क़

क्या बुरी थी ख़ामोशी जो इज़हार कर बैठा
इस तरह दिल को दश्त-ए-तन्हाई कर बैठा
तेरी बेरुख़ी व तौहीन मेरी, रुसवा हम दोनों
फिर भी यही इश्क़ दिल में मक़ाम कर बैठा

नादानियाँ

जब तक शक़ व शिक़ायत की बीमारी है
बिना ऐतबार फिर वहाँ मुहब्बत हमारी है
तुम्हारे ख़यालों में बेवफ़ा इन्सान ही सही
मेरा प्यार तमामउम्र के लिये वफ़ादारी है

नज़र आया है

ख़्वाब ही हक़ीक़त नज़र आते हैं
तसव्वुर में ही अक़्स नज़र आते हैं
ग़मों में भी लबों पर रही तबस्सुम
उल्फ़त में किये वादे नज़र आते हैं

---

1. उल्फ़त=प्यार **2.** हासिल=प्राप्त करना **3.** फ़क़त=सिर्फ़ **4.** तीमारदार = सेवा करने वाला **5.** रुसवा=बदनाम **6.** मक़ाम=स्थान **7.** ऐतबार = विश्वास

पिया की याद में

अलसाये नैना व मुरझाया चेहरा भी खिल गया
गज गामिनी मस्त गदराया तन भी निख़र गया
फागुन में फगुवा गाकर, सहेलियाँ छेड़ रही 'साथी'
ऐसे में तन काबू में, लेकिन मन बेकाबू हो गया

प्रकृति और प्यार

मुहब्बत में इस क़दर दीवाना हो जैसे
इबादते ख़ुदा में दरवेश बैठा हो जैसे
मुहब्बत करने का इरादा ताउम्र पुख़्ता
सहरा में गुलशन का महकना हो जैसे

प्रकृति और प्यार

प्यार में इस तरह मर मिटा हो जैसे
शमा पे परवाना ख़ाक होता हो जैसे
हर तरफ सिर्फ़ प्यार ही रोशन 'साथी'
नूरे माहताब रातों में महकता हो जैसे

---

1. तसव्वुर=ख़याल **2.** अक़्स=प्रतिबिम्ब **3.** लब=होंठ **4.** तबस्सुर=मुस्कुराहट **5.** उल्फ़त=प्यार **6.** इबादते ख़ुदा=ईश्वर की प्रार्थना **7.** दरवेश=साधु-सन्त **8.** सहरा=रेगिस्तान

प्रकृति व प्यार

इश्क़ दिल के धड़कने की दवा हो जैसे
ज़िन्दगी का वजूद पानी व हवा हो जैसे
यादों में इस मानिन्द गुमनामी का सफ़र
आफ़ताब का तेज पानी सोखता हो जैसे

प्यार का अहसास

सहमती नमकीन व मज़ेदार होती है
ज़बरदस्ती दर्दनाक नाग़वार होती है
दोनों एक दूसरे के प्रेम में समा जायें
ज़िन्दगी आनन्द की हक़दार होती है

प्यार का अहसास

अदायें तीर व तलवार होती हैं
मस्त आँखों से ख़ुमार होती हैं
चाल गजगामिनी व नागिन सी
क़दमताल पे जाँनिसार होती है

---

1. ख़ाक=जलकर मरना **2.** नूरे माहताब=चाँद की रोशनी **3.** मानिन्द=तरह **4.** आफ़ताब=सूरज **5.** नाग़वार=अनुचित

रियाज़

आहें सुलगकर ग़म व तन्हाई की आग हो जाती है
तड़पकर सदा-ए-दिल ग़ज़ल व नज़्म हो जाती हैं
मुस्सल रियाज़ से हर मुश्किल आसान हो जाती है
घुट-घुटकर जीने से बेबस मौत जल्द आ जाती है

राज़-ए-मुहब्बत

ख़्वाहिशे शबाब व हुस्न की जाम पर जाम हो जाती हैं
दौलते बदन खर्च मगर हसरते दिल बाक़ी रह जाती हैं
सीरत, इल्म औ हुनर फ़ानी हैं शख़्सियत-ए-हमसफ़र में
चेहरे पर चमक, जेब में खनक से कमर में बाहें जाती हैं

शिकायत-ए-मुहब्बत

अर्जी रिहाई की नहीं थी जो तूने सुनवाई कर दी
माँगी थी दिले क़फ़स में क़ैद मगर रिहाई कर दी
तेरे लबों की तबुस्सुम से आशियाँ बनाया था मैंने
मगर तुमने क़ाफ़िला-ए-दर्द से आशनाई कर दी

---

1. ख़ुमार=मदहोश **2.** जाँनिसार=कुर्बान **3.** सदा-ए-दिल=दिल की आवज़ **4.** नज़्म=कविता, मुस्सल=लगातार **5.** रियाज़=अभ्यास **6.** सीरत=व्यक्तित्व **7.** इल्म=ज्ञान **8.** फ़ानी=बेकार

तर्ज़ुबा

ख़ास अपनों में ही परायों की मानिन्द हो गया
लुटके अपनों से ही दिल को यह इल्म हो गया
देखे जो ख़्वाब कई बार वो तो सच न हो सके
ख़्वाब जो कभी आया न दिल में सच हो गया

जुदाई का वक़्त

वक़्त वापस नहीं आता गुज़रने के बाद
फिर भी जीते रहे वक़्त गुज़रने के बाद
कोई भी नहीं जीता यहाँ मरने के बाद
'साथी' तेरे जैसे ही जियेंगे मरने के बाद

मुहब्बत के नाम

बिना शिक़वे बिना गिला के ही मर जायेंगे
अगर मरते वक़्त तेरी तबस्सुम देख जायेंगे
बना दे ज़िंदगानी को ज़िन्दगी-ए-क़यामत
फिर भी हम तुझे रुसवा नहीं करके जायेंगे

---

1. क़फ़स=पिन्जरा **2.** लब=होठ **3.** तबुस्सुम=हंसी **4.** क़ाफ़िला-ए-दर्द=दर्द का समूह **5.** आशनाई=जान पहचान **6.** मानिन्द=तरह **7.** इल्म=ज्ञान **8.** अक्स=प्रतिबिम्ब

प्यार के लिये

आपके तसव्वुर सुनते जायेंगे
हम वैसे-वैसे ही बनते जायेंगे
हम से परेशानी महसूस हो तो
जज़्बात को दफ़्न करते जायेंगे

इश्क़ में बेवफ़ाई

जब भी दूर वह मेरी नज़र से हो जाते है
ख़ुद अपने आप में बेख़बर से हो जाते है
बेवफ़ा हो जाने के उसके वादे औ इरादे
मेरे वास्ते सहरा के शजर से हो जाते है

इश्क़ में जुदाई

गुफ़्तगू के वक़्त बादे सहर से हो जाते है
जुदाई के लम्हे मेरे ख़न्ज़र से हो जाते है
तबस्सुम उसकी बादे नसीम जैसी 'साथी'
नाराज़गी में फिर वो ज़हर से हो जाते है

---

1. तबस्सुम=मुस्कुराहट **2.** क़यामत=आख़िरी दिन **3.** रुसवा=बदनाम **4.** तसव्वुर=ख़याल **5.** सहरा के शजर=रेगिस्तानी पेड़

बेईन्तहा दीवानगी

इश्क़ को तमाम उम्र ढोना चाहता है
अश्क़ों से अपने हाथ धोना चाहता है
उसको तन्हाइयाँ इतनी अज़ीज़ है कि
भरी महफ़िल में एक कोना चाहता है

नादान इश्क़

उसकी नाराज़गी का कैसे ख़याल हो
मेरे सामने उसका कोई तो सवाल हो
माना कि मैं संगीन कुसूरवार ही सही
कुछ तो ख़ता का उसे भी मलाल हो

बेवफ़ा महबूब

क्या कोई इस क़दर मज़बूर हो जाता है
बेपनाह चाहत से भी बेख़बर हो जाता है
दिखा करके ग़म औ जुदाईयों का रास्ता
बेहिसाब तन्हाई का हमसफ़र हो जाता है

---

1. ग़ुफ़्तगू=वार्तालाप **2.** सहर=सुबह **3.** नसीम=मधुर

बेबस मुहब्बत

उस की बेरूख़ी से ही सहम जाता हूँ
अपने दिल को ख़ुद से जुदा पाता हूँ
दिवानगी का आलम ऐसा होता है कि
उसके बिना ज़िंदगी से ख़ौफ़ खाता हूँ

मुहब्बत की अहमियत

उसको ज़िद है मेरा सब कुछ होने की
ग़म नहीं है उसको सब कुछ खोने की
मुहब्बत कर के क्या कुछ नहीं पाया है
तो फिर क्या कोई बात इसमें रोने की

नादान मुहब्बत

उसको मेरे ऐतबार का इम्तहान लेना है
मुहब्बत के क़त्ल का ही सामान लेना है
मेरे ज़ज्बात तो तहरीर है मेरी शायरी में
इश्क़ के सुबूत में कौनसा ईमान लेना है

प्यार का अहसास

सहमति हसीन औ मज़ेदार होती है
ज़बरदस्ती दर्द से नाग़वार होती है
इबादत के मानिन्द अन्ज़ाम दो तो
मुहब्बत अक़ीदत में शुमार होती है

ख़ुद्दार मुहब्बत

मेरी बेवफ़ाई का उसको यकीं नहीं होता
किसी भी तरह अपना ऐतबार नहीं खोता
जफ़ाओं की ये अन्धेरी राते कैसे गुज़रेगी
इस उम्मीद में ही वो रात भर नहीं सोता

बेहाल मुहब्बत

पहले सी क़शिश जब जुदा हो गई
बदन से मेरी रूह तब ख़फ़ा हो गई
साँसों में हर वक़्त मुहब्बत की यादें
अब साँसें भी दिल से ज़फ़ा हो गई

---

1. तहरीर=लिखना **2.** नाग़वार=नापसन्द **3.** इबादत=प्रार्थना **4.** मानिन्द=तरह **5.** अक़ीदत=श्रद्धा **6.** शुमार=शामिल **7.** ज़फ़ा=बदहाली

मुहब्बत की अहमियत

दिलो-दिमाग़ में मुहब्बत के जज़्बात नहीं है
ख़ुशहाल ज़िन्दगी के फिर ख़यालात नहीं है
मुहब्बत में दीवानगी और बेख़ुदी का आलम
रंज औ ग़म के लिये कोई सवालात नहीं है

तासीर-ए-मुहब्बत

जिस दिन भी मुहब्बत हासिल हो जाये
उस वक़्त ही ज़िन्दगी क़ाबिल हो जाये
हमेशा ज़ेहन में ख़यालात विसालेयार के
तो जानलेवा तन्हाईयाँ वाज़िब हो जाये

क्या हो गया है पिया

प्यार होता है कैसा यह बताना पिया
हमको ये आता नहीं है जताना पिया
मन अब तो हो गया है दिवाना पिया
अब तो संसार लगता है बेगाना पिया

---

1. बेख़ुदी=अपने आप से बेख़बर

नादान इश्क़

कभी ऐसी नादान ग़लती मत करना
मुहब्बत करने की जल्दी मत करना
तन्हाईयों के नश्तर चुभते हैं सीने में
दिल को इस तरह जख़्मी मत करना

बेबस मुहब्बत

दर्द औ ग़म दिल की सदा हो गई
नादाँ चाहत फिर भी फ़िदा हो गई
कैसे रस्मों औ रिवाज़ों की रिवायतें
पाग़लपन में दीवानगी ख़ुदा हो गई

ख़ुशहाल आशियाना

अलग तरह की क़ायनात को दिल में बसा ले
इश्क़ में ख़ुशहाल मक़ाम को दिल में बसा ले
मन्ज़र दर मन्ज़र बनते हैं, ज़िन्दगी के सफ़र में
ज़िन्दगी समझ इस ख़्वाब को दिल में बसा ले

---

1. नश्तर=नुकीले काँटे **2.** रिवायतें=परम्परायें

मुहब्बत सब कुछ

ज़ीस्त का सफ़र ख़ुशहाल ज़न्नत हो जाय
ग़र तेरी आँखों की कुछ इनायत हो जाय
जीने का बहाना मिल जाय ज़िन्दगानी को
अगर मुझे नसीब तुम्हारी मुहब्बत हो जाय

ख़ुदग़र्ज़ मुहब्बत

साहिल पर तूफ़ानी लहरों का बसना क्या है
उसका इस तरह से मेरा होकर रहना क्या है
मुझे हक़ देता नहीं है ख़ुद पे अख़्तियार का
मेरा बिना अधिकार के उसका बनना क्या है

कुछ तो हो

उसको जिद क्यों है मुझ पे अख़्तियार हो
वह सोचता क्यों नहीं मेरे भी अधिकार हो
उसके जज़्बात पे मुझे कुछ तो ऐतबार हो
मेरी ज़िन्दगी का कुछ तो वह राज़दार हो

---

1. ज़ीस्त=ज़िन्दगी **2.** इनायत=कृपा **3.** साहिल=किनारा **4.** अख़्तियार=नियन्त्रण

हमसफ़र

वो चाहता है कि मेरे प्रेम का भागीदार हो
मेरे दुख-दर्द में वह कुछ तो मददगार हो
अगर उसे भी मेरे जैसा ही बेहद प्यार हो
तन्हाई के वक़्त कुछ तो वो भी बेक़रार हो

जीवन साथी

उसका दिल और दिमाग़ मेरा वफ़ादार हो
मेरी बदहाली का वह भी तो ज़िम्मेदार हो
मेरी जख़्मी रुह का वह भी तीमारदार हो
वह मुझ पर कुछ हद तक ज़ाँ निसार हो

मज़बूर मुहब्बत

मैं बेताब रहता कि वो मेरा दीदारे यार हो
उसकी नज़र में हम भी तो विसाले यार हो
उस की बेज़ा तमन्नाओं से बहुत लाचार हूँ
'साथी' के साथ का वह भी तो तलबगार हो

---

1. तीमारदार=सेवा करने वाला **2.** जाँ निसार=जान कुर्बान

महबूब के लिये

दिल की ख़ुशी के लिये मैं एक खिलौना हूँ
वक़्त को गुज़ारने के लिये मैं एक बहाना हूँ
जब ज़रूरत होती है वो याद कर लेता मुझे
ख़्वाबों की ताबीर के लिये मैं एक तमन्ना हूँ

नादान इश्क़

क्या बुरी थी ख़ामोशी जो इज़हार कर बैठा
इस तरह दिल को ख़ुद से बेज़ार कर बैठा
तेरी बेरुख़ी व तौहीन मेरी, रुसवा हम दोनों
फिर भी यही इश्क़ दिल में मज़ार कर बैठा

पिया की याद में

मौसम रंग बिरंगा हो गया, रंग बसन्ती हो गया
आया सावन झूम के, मदमस्त मन बैरी हो गया
सरसों खिली खेत में, मोर पपीहा कूके बाग़ में
ऐसा ख़ुशगवार मौसम, नैनों की नींद चुरा गया

---

1. दीदारे यार=महबूब के दर्शन **2.** विसाले यार=महबूब का मिलन **3.** बेज़ा=अनुचित **4.** तलबगार=उत्सुक **5.** ख़्वाबों की ताबीर=स्वप्नफल **6.** इज़हार=दिल की बात कहना **7.** बेज़ार=उदास **8.** रुसवा=बदनाम

मुहब्बत की तासीर

यह इश्क़ क्यों कर इतना असरदार है
हर तरह से तबाह होने को बेक़रार है
बेइन्तहा सताती है उसकी हसीन यादें
दिल औ दिमाग़ में यह कैसा ख़ुमार है

ख़ूबसूरत मुहब्बत

यह हसीन मौसम कितना ख़ुशगवार है
ज़िन्दगी के सफ़र में ग़र वो वफ़ादार है
दर्द और ग़म से बेख़बर रहता है 'साथी'
यह मुहब्बत इतनी मस्त औ मज़ेदार है

बेवफ़ा महबूब

मेरी ज़ायज परेशानियों से बेख़बर उसके जज़्बात है
उसकी मुहब्बत में लाचार व बेबस मेरे बुरे हालात है
क़ाबिल होते हुये भी मेरी कुछ भी मदद नहीं करता
किस तरह से वो मेरी ज़िंदगानी में शरीके हयात है

---

1. ख़ुमार=मदहोशी

ख़ुदग़र्ज़ इन्सान

सामने से सीने पे वार करने का अब ज़माना नहीं
पीठ पर ख़न्ज़र से बढ़कर तो कोई निशाना नहीं
मुँह पर हक़ीक़त बयान करना बदसलूकी होती है
जो बगल में छुरी ले कर बैठा है वो कमीना नहीं

बदहाल ज़िन्दगी

उसकी ख़ुशियों के लिये रोज़ाना बदहाल हूँ मैं
बेज़ान दिल और दिमाग़ में ज़िन्दा सवाल हूँ मैं
एक लाश की मानिन्द होती है मेरी गुज़र बसर
मेरे दिली जज़्बात के लिये हर रोज़ हलाल हूँ मैं

बदहाल जज़्बात

उसके जज़्बातों से यक़ीनन अक़्सर बेहाल हूँ मैं
क्या उसकी दिली मुहब्बत का नूरे ज़माल हूँ मैं
उसके इश्क़ में दीवानगी का ऐसा आलम 'साथी'
मजबूरियों की गिरफ़्त में एक बेबस ख़याल हूँ मैं

---

1. शरीके हयात=जीवन साथी **2.** मानिन्द=तरह

नादान इश्क़

उसके वादे पे ऐतबार कितना नादान हूँ मैं
मोम की तरह पिघलता हुआ इन्सान हूँ मैं
यक़ीनन मुझे जलकर ख़ाक तो होना ही है
परवाने की तरह मचलता हुआ ईमान हूँ मैं

मासूमियत

उसकी बेवफ़ाईयों से कितना हैरान हूँ मैं
क्योंकर उसके लिये इतना परेशान हूँ मैं
अहसास और जज़्बात उसके नाम करके
अब अपने तन और मन से बेज़ान हूँ मैं

हसीन मुहब्बत

मुहब्बत में वह इस तरह से बेताब हो जाता है
रस्मो रिवाज़ का बंधन भी अज़ाब हो जाता है
जब अहसास होता है उसको हसीन प्यार का
उसका तन व मन फिर लाज़वाब हो जाता है

---

1. नूरे ज़माल=सौन्दर्य का प्रकाश **2.** आलम=स्थिति

मुहब्बत का असर

हर वक़्त जो ख़्वाबो ख़यालों में रहता है
वो ही तो दिल और दिमाग़ में बसता है
मुहब्बत के अहसास कम ही क्यूँ नहीं हो
साहिल पे लहरों का निशान तो बनता है

बेइन्तहा मुहब्बत

जो एक लम्हें की बेवफ़ाई से सहमता है
वो ही अचानक सदमे से बेमौत मरता है
महबूब के लिये बेक़रारी व क़शिश हो तो
लाख जतन के बाद भी दिल मचलता है

बेक़रार इश्क़

सारा दिन बैचेनी में मारा–मारा फिरता है
महबूब की याद में जो रातभर जागता है
बेचैन औ बेताब करता है तन व मन को
वही तो उम्र भर के लिये साथ चलता है

---

1. साहिल=किनारा

ज़िन्दगी का फलसफ़ा

जो अपने दिल की ही इबादत करता है
ख़ुशियों की घर बैठे ज़ियारत करता है
जो सिर्फ़ अपने ही दिमाग़ की मानता है
अपनो से रिश्ते में वो तिज़ारत करता है

ख़ुशहाल मुहब्बत

प्यार तन व मन को तंदरूस्त करता है
दिले क़द्र से ख़ुद पर इनायत करता है
जिसे अपनी जान से प्यारा होता महबूब
वही अपने आप से भी अदावत करता है

इश्क़ में सब कुछ जायज़

महबूब की नाजायज़ हिमाक़त करता है
इस तरह मुहब्बत को सलामत करता है
जिसे बेइन्तहा मुहब्बत हो अपने 'साथी' से
फिर अपनों से भी वह बग़ावत करता है

---

1. इबादत=प्रार्थना **2.** ज़ियारत=तीर्थ यात्रा **3.** तिज़ारत=व्यापार **4.** इनायत=रहम **5.** अदावत=दुश्मनी

मुहब्बत की अहमियत

मुहब्बत का ख़ूबसूरत अहसास ज़िन्दगानी हो जाती है
दुनिया में अजर औ अमर प्रेम की कहानी हो जाती है
मीरा कृष्ण की व लैला मजनू की दीवानी हो जाती है
बेख़ुदी में तन व मन से ज़िन्दगी मस्तानी हो जाती है

बेवफ़ा मुहब्बत

उसे मेरे दिली जज़्बात के अहसास नहीं
प्यार के लिये उसके दिल में प्यास नहीं
जब पूरी तरह एक दूसरे के न हो जायें
प्यार का वह रिश्ता तब तक ख़ास नहीं

मुहब्बत के बिना

मुहब्बत के रंग में रंगा हुआ लिबास नहीं
क़ाबिले शरीके हयात उसमें विश्वास नहीं
रिश्तों की ज़रूरत का अहसास न हो तो
फिर महबूब के दिल में कोई निवास नहीं

---

1. हिमाक़त=समर्थन **2.** बेख़ुदी= बेख़बर

बेबस मुहब्बत

मुझे क्यों अपनी मुहब्बत पर इतना गुमान होता है
यह दिल क्योंकर बार-बार इतना नादान होता है
रिश्ते, यादें, मुलाक़ातें और वादे कैसे भी क्यों ना हो
दिल व दिमाग़ पे प्यार का ज़रूर निशान होता है

कोई तो हो

प्यार की दास्तान कोई तो हो
जीने का मक़सद कोई तो हो
सिर्फ़ दिल ही तो काफ़ी नहीं
दिल की धड़कन कोई तो हो

कोई तो हो

कम से कम ऐसा कोई तो हो
आँसू बहाने वाला कोई तो हो
लाचार औ बेक़रार है मुहब्बत
मन्ज़िले हमसफ़र कोई तो हो

---

1. लिबास=पहनावा **2.** शरीके हयात=जीवन साथी **3.** गुमान=घमण्ड

ख़ुद्दार मुहब्बत

उसकी ख़ुशी के लिए सब कुछ ख़ोना है मुझे
अपने आप से उसके लिये जुदा होना है मुझे
अपना ईमान खोकर भी ज़िंदा हूँ उसके लिये
अपनी ज़िन्दा लाश को ख़ुद ही ढ़ोना है मुझे

मज़बूरियाँ

मुलाक़ात से पहले तो बेहद बेक़रारी है
जुदाई का वक़्त क़यामत से भी भारी है
कहीं रुसवा न हो जाये हमारी मुहब्बत
मुलाक़ात के वक़्त तो बेबस लाचारी है

हसीन मुहब्बत

पता नहीं कब दिन व रात की गुज़र हो गई
आई आपकी याद तो दुनिया बेख़बर हो गई
आपकी जुल्फ़ें बिखर के पुरवाई घटा सी हो गई
इस फिज़ा में 'साथी' से मुलाक़ाते अमर हो गई

---

1. क़यामत=आख़िरी वक़्त **2.** रुसवा=बदनाम

समझदार प्यार

बेवफ़ाई में तबाही के सिवा कुछ न रहेगा
प्यार मुहब्बत से ही तो वह अपना बनेगा
समझने ही होगें हमें एक दूजे के हालात
तब जाकर ही अपने प्रेम का घर सजेगा

पाक़ मुहब्बत

उसकी ख़ुशी के लिये जीवन भर साथ निभाना है
चाहे अपने वजूद को ज़लालत से रोज़ मिटाना है
मेरी ख़ामोशियों से बस इतना कुछ उसे सुनाना है
मेरे दिल व दिमाग़ में क्या है यह उसे दिखाना है

मेरी मुहब्बत

मेरे दिली जज़्बात का उसे यह अहसास कराना है
बस इतना सा सवाब ही पाक़ मुहब्बत से कमाना है
गौर से ही सुनता है जिसे सारा का सारा ज़माना
क्या उसके जैसा कोई और पाग़ल और दीवाना है

बेवफ़ा इश्क़

न कोई अफ़सोस और न कोई मलाल है
फिर क्या चेहरे पे मुहब्बत का गुलाल है
किसी को जवाब देने लायक नहीं रहता
वह ख़ुद ही अपने आप में एक सवाल है

बेवफ़ा सनम

ख़ुद की नज़र में ही रहता जो हलाल है
ऐसा ख़ुदग़र्ज़ महबूब प्यार का दलाल है
बेगुनाह का क़त्ल करके भी ज़िंदा रहता
मासूम क़ातिल का कैसा हसीं क़माल है

ख़ुदग़र्ज़ महबूब

कौन ग़र्दिश में उसके संग चलेगा
जो सिर्फ़ अपने बारे में ही सोचेगा
ख़ुदग़र्ज़ और सितमग़र महबूब तो
महबूब की नज़र में शर्म से गिरेगा

---

1. सवाब=पुण्य

सच्चा प्यार

जो पाक़ दिल शख़्सियत से रहेगा
वही सबके सामने ही सच बोलेगा
चालाक और बेईमान ही चुप रहेगा
सच्चा दीवाना तो गुस्सा ही करेगा

मज़बूर मुहब्बत

उसके दामन में दिल चैनो सुक़ून से बसता है
बिना उसके तन और मन बदहाल ही रहता है
मज़बूरियाँ और लाचारियाँ इतनी ज़ालिम है कि
बेबस दिल व दिमाग़ किस किस तरह मरता है

मुहब्बत की तासीर

तन्हाई में अश्क़ बनकर तन-मन से मिलता है
हज़ार कोशिश के बाद भी उस में ही रमता है
अपने नादान दिल को हज़ार बार समझाता हूँ
तो भी उसका अक़्स आँखों में समाया रहता है

महबूब के बिना

उसके बिना एक पल ऐसे जी कर देखा
तन्हाई में दर्द व ग़म से तड़प कर देखा
मुझको ज़न्नत भी दोजख़ से बदतर होगी
महबूब बिना ही अगर मैंने मर कर देखा

नादान मुहब्बत

उसको जिद है मेरे इश्क़ को मिटाने की
ज़िन्दगी करनी है उसे ग़मों से बसाने की
जब उसकी ज़िन्दगानी तबाह हो रही थी
तब भी उसने नहीं सोची कुछ बचाने की

नादान मुहब्बत

मैंने बहुत कोशिशें की उसे समझाने की
उसने कोई पहल ना की मुझे मनाने की
तन-मन में बेहद बेक़रारी थी मिलन की
तो क्या ज़रूरत थी नादानी दिखाने की

---

1. दोजख़=नर्क

नासमझ मुहब्बत

बिना अधिकार बेबस हो कर हक़ मानता रहा
मुहब्बत के पाग़लपन में ज़लालत सहता रहा
जितना गहरा प्यार उतना ही गुस्सा था मेरा
और वह मेरे जज़्बातों को ग़लत समझता रहा

नासमझ महबूब

जिसको दिन भर बार-बार मैं समझाता रहा
फिर भी वह नादान और नासमझ बनता रहा
इतना कुछ बुरा होने पे भी अहसास न हुआ
जिसको मैं हमेशा प्यार से इतना कहता रहा

ख़ुदग़र्ज़ मुहब्बत

मेरी मौत का भी तो उसे कोई फ़ायदा ना हुआ
उसका ऐतबार फिर भी तो क्यों ज़िन्दा ना हुआ
बेख़ुदी की हद तक दिल से उसकी इबादत की
मगर बेहद मलाल की वो ज़ालिम ख़ुदा ना हुआ

ख़ुद्दार मुहब्बत

ग़म नहीं की लाख जतन के बाद भी मेरा ना हुआ
मगर कभी भी मेरा तन व मन उससे जुदा ना हुआ
यह तो सरासर बेमानी कि वह मेरा अपना ना हुआ
ख़्वाब व ख़याल से उसका तसव्वुर बेग़ाना ना हुआ

बेपनाह इश्क़

इस तरह से मज़बूर होकर दीवाना क्यों हूँ
शमा पर जलने को बेताब परवाना क्यों हूँ
बेहद मुश्क़िल है मुहब्बत का आबाद होना
इतना पाग़ल और नासमझ बेग़ाना क्यों हूँ

पाक़ दामन इश्क़

मुहब्बत की इबादत औ ज़ियारत में तमन्ना क्यों हूँ
आख़िरी ख़्वाहिश में मिलन के लिये मदीना क्यों हूँ
मेरी पाक़ दामन मुहब्बत का इतना सा फलसफ़ा है
उसके दामन में चैन औ सुक़ून का ठिकाना क्यों हूँ

---

1. इबादत=प्रार्थना **2.** तसव्वुर=ख़याल **3.** बेग़ाना=पराया

मुहब्बत के सबूत

मेरा दिल और दिमाग़ से बेक़रार हो जाना
यह सबूत है कि मुझे उससे प्यार हो जाना
यह ख़ुदा की ही ख़्वाहिश औ तमन्ना है कि
नामुक़िन हालात में हमारा इज़हार हो जाना

मुहब्बत के सबूत

उसके बिना एक पल का दुश्वार हो जाना
जुदाई में तन व मन का बेक़रार हो जाना
यक़ीनन ये हमारे प्यार का ही असर है की
तमाम मुश्क़िलों से हमारा इक़रार हो जाना

बेशुमार मुहब्बत

मुहब्बत में दिल से तो लाचार हूँ
वरना तो दीवाना मैं भी ख़ुद्दार हूँ
मेरी यादों को कैसे भुला पाओगे
सागर की तरह से गहरा प्यार हूँ

---

1. इबादत=प्रार्थना **2.** ज़ियारत=तीर्थ यात्रा **3.** मदीना=तीर्थ स्थान **4.** फलसफ़ा=चिन्तन **5.** दुश्वार=मुश्क़िल

महबूब ही सब कुछ

उसके बिना मेरा एक पल जीना अब आसान नहीं है
उसकी यादों के सिवा अब कोई मेरा अरमान नहीं है
हमेशा के लिए उसकी सूरत बस गई है मेरे दिल में
मेरे ख़्याल में रहने के लिए अब कोई इन्सान नहीं है

प्यार के लिये

उसके ख़यालों में ख़ुद से बेज़ार हूँ
बेख़ुदी में इश्क़ की ज़िंदा मज़ार हूँ
हर हाल में मिटने के लिए तैयार हूँ
प्यार के लिए फिर भी तो प्यार हूँ

वास्ते मुहब्बत

ख़ुद से बग़ावत के लिए लाचार हूँ
उसके आशियाने में मैं ही संसार हूँ
सिर्फ़ उसका हो जाने की वजह से
सारे ज़माने के लिए फिर बेक़ार हूँ

---

1. बेज़ार=उदास **2.** बेख़ुदी=अपने से बेख़बर

दास्ताने मुहब्बत

करवटें बदल-बदल कर रतजगी रातें हैं
दिल औ दिमाग़ में सिर्फ़ मेरी ही बातें हैं
विरह की वेदना में मेरे गीत गुनगुनाते हैं
दिली ख़्वाहिश में मिलन की मुलाक़ातें हैं

महबूब का ऐतबार

उसके तन औ मन में मेरे प्यार का ही ख़ुमार है
उसकी नज़र में मेरी शख़्सियत का ही दीदार है
उसके ख़यालातों में मेरे तसव्वुर का ही शुमार है
उसके ख़्वाबों में मेरी मुहब्बत ही परवर दीगार है

बेख़ुदी के आलम

मेरे लिये ख़ुद अपने आपसे भी बेग़ाना है
मेरे ख़यालों में हर वक़्त रहता दीवाना है
मेरे हसीन ख़्वाब उसके लिये मस्ताना है
इस क़दर इतना बेख़ुदी का आशियाना है

---

1. परवर दीगार=ईश्वर

महबूब का ऐतबार

दरवेश जैसी उसकी मुहब्बत में इबादत है
मेरी यादों के सहारे जीना ही ज़ियारत है
मेरे लिये तो ज़माने से उसकी अदावत है
बहुत कुछ खोकर मुहब्बत की तिजारत है

बेबस मुहब्बत

मुलाक़ातों में ज़ालिम मजबूरियाँ हज़ार है
जुदाई में तड़प कर जीना बेहद दुश्वार है
ख़ुशियों से दिल व दिमाग़ बहुत बेज़ार है
रस्मों और रिवाज़ों से वह बेहद लाचार है

मुहब्बत का ऐतबार

उसकी नज़र में मुहब्बत का मान और स्वाभिमान है
उसके तसव्वुर में चाहत औ क़शिश का इत्मिनान है
हर हाल में मुहब्बत कायम रहे ऐसा उसका ईमान है
उसके दिलो दिमाग़ में मुहब्बत ही आन और शान है

---

1. बेग़ाना=पराया **2.** बेख़ुदी=अपने आप से बेख़बर **3.** दरवेश=सन्त 4. इबादत=प्रार्थना 5. ज़ियारत=तीर्थ यात्रा **6.** अदावत=दुश्मनी **7.** तिजारत=व्यापार **8.** दुश्वार=मुश्क़िल **9.** बेज़ार=उदास

बेशकिमती मुहब्बत

मेरी यादें औ मुलाक़ाते उसके लिये अनमोल है
मेरी मुहब्बत का उसके लिये नहीं कोई मोल है
दीनो ईमान से ज़्यादा मेरी वफ़ाओं का तौल है
रस्मो रिवाज़ से भी बढ़कर मेरे वादों के बोल हैं

बेमिसाल मुहब्बत

मेरे ही तसव्वुर में बेसुध रहना बेशुमार हैं
जुदाई में लगातार बहते अश्क़ बेहिसाब हैं
मेरे बिना अब उसका आशियाना बेहाल है
मेरे सिवा अब उसके लिये सब बेख़याल है

महफ़ूज़ मुहब्बत

दिमाग़ से बेक़रार हो जाने के बाद भी
रो-रो कर बेहाल हो जाने के बाद भी
तन-मन से बेचैन हो जाने के बाद भी
हालात से मज़बूर हो जाने के बाद भी

मुहब्बत के ज़ुनून

अपनों से भी बेवफ़ाई को लाचार है
ज़माने भर में रुसवाई को तैयार है
गर्दिशों में हर तरह से मददगार है
ज़रूरत के वक़्त में वो जाँ निसार है

मुहब्बत का ऐतबार

मेरे नाम का ही उसकी माँग में सिन्दूर है
मेरे नाम का मंगलसूत्र पहनकर मगरूर है
मेरे नाम का ही करवा चौथ का दस्तूर है
वह सुहाग के रस्मो-रिवाज़ों से मजबूर है

दास्ताने सुख़न

उसके तसव्वुर में लिखे हुये मेरे अश्आर है
जो उसकी ही दिली गुफ़्तगू से गुलज़ार हैं
मेरे सुख़नवर की रुह का वही तीमारदार है
मेरी नज़्मों के फलसफ़े का वही चारागार है

---

1. सुख़न=कविता **2.** तसव्वुर=ख़याल **3.** अश्आर=ग़ज़ल के शेर **4.** गुफ़्तगू=बातचीत **5.** गुलज़ार=रोशन **6.** सुख़नवर=कवि **7.** नज़्म=कविता **8.** फलसफ़ा=चिन्तन **9.** चारागार=सहयोगी

मासूम मुहब्बत

जो अपने महबूब को बिना वज़ह सताते हैं
वो ख़ुद अपने दिल को आप ही जलाते है
क्या सबूत हो सकते हैं बेशुमार मुहब्बत के
अपने दिल की धड़कन को कैसे गिनाते है

नासमझ इश्क़

जो प्यार में अपनी अहमियत को जताते हैं
महबूब की नज़रों में ख़ुद को ही गिराते हैं
यक़ीनन यह मेरी बेपनाह मुहब्बत के सबूत
जो गुनहगार को दिले लाचार से मनाते है

विरह की वेदना

बेचैनी और बेक़रारी में तन और मन तड़पता होगा
तन्हाई में वक़्त करवटें बदल के कैसे गुज़रता होगा
विरह की वेदना में मन बहुत विचलित रहता होगा
मधुर मिलन की प्यास में तन बहुत झुलसता होगा

बेक़रार मुहब्बत

अग्न सा तपता हुआ बदन ठण्डी आँहें भरता होगा
दामन में समाने के लिये बेचैन दिल मचलता होगा
प्यार का गहरा सागर तन व मन में उफनता होगा
दो बदन एक जान होने के लिये ही तड़पता होगा

बेख़ुदी के आलम

ख़यालों में मेरी यादों का अक़्स और तसव्वुर रहता होगा
मेरे आगोश में समा कर बातें करने को मन करता होगा
तूफ़ानी सर्द रातों में बदन बर्फ़ की तरह से जमता होगा
मेरा प्यार पाने के लिये रूख़सार कमल सा खिलता होगा

दिल की ख़्वाहिश

मिलन की चाहत में बदन सोलह श्रृंगार से सँवरता होगा
गुलाबी और रसीले होठों पर प्यार का सागर भरता होगा
बेक़रार तन और मन में प्यार पाने का ख़ुमार रहता होगा
ख़्वाबगाह में हर पल मेरा ख़याल औ अक़्स दिखता होगा

---

1. अक़्स=प्रतिबिम्ब **2.** तसव्वुर=ख़याल **3.** रूख़सार=चेहरा

मुहब्बत के तसव्वुर

ख़्वाबों में मेरा आशियाना हर पल आँखों में बसता होगा
रग रग में मेरे प्यार का दरिया ही रात भर बहता होगा
दिल औ दिमाग़ में हर वक़्त मेरा ख़याल रहता होगा
यादों के अहसास से आपका तन औ मन महकता होगा

बेबस प्यार

रस्मों और रिवाज़ों से बेहद लाचार हूँ
मैं भी मिलने के लिये बेहद बेक़रार हूँ
ख़ुद अपने आप से भी बेहद बेज़ार हूँ
हँसीं बाँहों में समाने के लिये तैयार हूँ

तन्हाई के मन्ज़र

मेरा तन और मन भी विरह में बदहाल है
मेरा दिल और दिमाग़ तन्हाई में बेहाल है
आप से जुदा रहने का ही बेहद मलाल है
मेरे तसव्वुर में रहता आपका ही ख़याल है

---

1. ख़ुमार=मदहोशी **2.** ख़्वाबगाह=शयन कक्ष **3.** बेज़ार=उदास

जाँ निसारी

मैं हरहाल में आपके लिये वफ़ादार हूँ
हमेशा आपके लिये बेहद ईमानदार हूँ
आपके लिये हमेशा मरने को तैयार हूँ
दीन और ईमान से मुक़म्मिल प्यार हूँ

मुहब्बत के जज़्बात

किसी भी तरह पास रहने का ज़हन में ख़्वाब है
मेरे चैन और सुक़ून का सिर्फ़ आप ही ज़वाब है
मेरा दामन आपके प्यार की मुक़म्मिल किताब है
मेरा तन औ मन आपकी मुहब्बत से लाज़वाब है

प्यार का चिन्तन

मेरे भी आप जैसे बेक़रार व बेचैन जज़्बात है
हर पल आपके ही पास रहने के ख़यालात है
यादों के सहारे ज़िन्दा रहने के मेरे हालात है
आपके बिना यह ज़िन्दगी अब तो हवालात है

---

1. मुक़म्मिल=सम्पूर्ण

मुहब्बत की तासीर

बग़ैर रज़ामंदी से नागवार होती है
राजी ख़ुशी से ख़ुशगवार होती है
दोनों की रंगत नहीं हो एक जैसी
आग व बरसात कहाँ यार होती है

चाहत के सबूत

किसी के ख़यालात और अहसास हो जाना
मुलाक़ात की चाहत उसकी आस हो जाना
हज़ारों मीलों की दूरियाँ भी पास हो जाना
प्रेम का सागर उसके लिए प्यास हो जाना

मुहब्बत के सबूत

किसी के दिल की सांसों में शुमार हो जाना
ख़यालों में उसका तसव्वुर बेशुमार हो जाना
उस से मुलाक़ात के लिए बेक़रार हो जाना
तन और मन में उसका ही ख़ुमार हो जाना

---

1. नागवार=अनुचित

मुहब्बत के लम्हें

किसी चेहरे का सुबह के पल आफ़ताब हो जाना
उस चेहरे का रोशन शाम का माहताब हो जाना
चाँदनी रात में उस चेहरे का ही ख़्वाब हो जाना
सारे दिन के सवालों का वो ही जवाब हो जाना

आराधना

किसी के दिल के तसव्वुर का इबादत हो जाना
उसकी यादों का आशियाँ ज़ियारत हो जाना
उसके लिए सारे ज़माने से अदावत हो जाना
ख़ास अपनों से उसके लिए बग़ावत हो जाना

उपासना

किसी का ख़ुदा से इबादत में वरदान हो जाना
दिल के मन्दिर में उसका ही भगवान हो जाना
ख़्वाबों औ ख़यालों में उसका अरमान हो जाना
उसकी मुहब्बत और चाहत ही ईमान हो जाना

---

1. ख़ुमार=मदहोश 2. आफ़ताब=सूरज 3. माहताब=चाँद 4. इबादत=प्रार्थना 5. ज़ियारत=तीर्थ यात्रा 6. अदावत=दुश्मनी

ऐतबार

किसी अजनबी की सूरत पे इत्मिनान हो जाना
उसकी दीवानगी में दिल का नादान हो जाना
आशियाँ उसकी यादों का ही अरमान हो जाना
तन-मन में उसके अक़्स का निशान हो जाना

बेक़रार इश्क़

किसी की जुदाई में तड़प कर बेहाल हो जाना
उसकी याद में अश्क़ बहाकर बदहाल हो जाना
हर वक़्त ज़हन में सिर्फ़ उसका सवाल हो जाना
दिलो दिमाग़ में हरपल उसका ख़याल हो जाना

मिलन की आरज़ू

किसी से मुलाक़ाते और गुफ़्तगू लाज़वाब हो जाना
उससे मिलने की आरज़ू औ तमन्ना ख़्वाब हो जाना
ताउम्र के सारे सवालों का एक ही जवाब हो जाना
सुख़नवर की शायरी का मुक़म्मिल किताब हो जाना

1. इत्मिनान=विश्वास **2.** अक़्स=प्रतिबिम्ब **3.** अश्क=आँसू **4.** ज़हन=दिमाग़

मज़बूर मुहब्बत

किसी के लिये तन मन से बेहद लाचार हो जाना
अपने आप से भी बेख़ुदी में बेहद बेज़ार हो जाना
दामन दर्द व ग़म से आबाद एक बाज़ार हो जाना
तन्हाई और जुदाई में बहते अश्क़ संसार हो जाना

विरह की वेदना

किसी के बदन पर अश्क़ों की जलन तेजाब हो जाना
विरह की व्याकुल वेदना में तड़प कर बेताब हो जाना
बेख़ुदी में उसके ख़याल ही दिल में बेहिसाब हो जाना
रस्मों और रिवाज़ के बन्धन तोड़कर बेनकाब हो जाना

मुहब्बत के इत्मिनान

दिलो दिमाग़ से मेरे महबूब मुझपे करो ऐतबार
मैनें कभी भी नहीं किया अपने वादे से इन्कार
मुझे हमेशा याद रहेगा जो किया है मैंने क़रार
उम्र भर साथ रहेगा आपका प्यार भरा इज़हार

1. गुफ़्तगू=बातचीत **2.** सुख़नवर=शायर **3.** मुक़म्मिल=सम्पूर्ण **4.** बेख़ुदी=बेख़बर **5.** बेज़ार=उदास **6.** बेताब=बेचैन **7.** बेनकाब=बेपर्दा (आज़ाद)

ख़ुद्दार मुहब्बत

मैं भी हमेशा रहता हूँ बेहद बेचैन और बेक़रार
मैं हमेशा रहूँगा आपके लिये हर वक़्त वफ़ादार
मेरे दर्द और ग़मों के आप ही तो हैं तीमारदार
मगर रस्मो रिवाज़ से मैं इतना बेबस व लाचार

समझदार मुहब्बत

कोशिशें क़ामयाब होगी, वादे ज़रूर पूरे होगें मेरे प्यार
अपने तन और मन को मत करो बेचैन और बेक़रार
दिल और दिमाग़ में प्यार की मधुर यादें रहें बेशुमार
ख़्वाबों व ख़यालों में एक दूजे का तसव्वुर रहे शुमार

हसीन मुहब्बत

हमारी ख़ूबसूरत कल्पनायें बहुत शीघ्र होगी साकार
हमारी मुहब्बत बहुत जल्दी ही लेगी सम्पूर्ण आकार
हमारे प्यार का गुलशन हमेशा महकेगा सदा बहार
तब तक मेरे मधुर प्यार इत्मिनान से करो इन्तज़ार

मधुर प्यार

मिलन की चाहत में आप ही हैं मेरे विसाले यार
आँखों में हर वक़्त आपका चेहरा ही दीदारे यार
मेरे दिल और दिमाग़ में आपकी चाहत बरक़रार
मेरे ख़्वाबों व ख़यालों में सिर्फ़ आपका ही विचार

दिल की पुकार

मुझ पर नहीं रहमे दिल ख़ुदा पर तो करो ऐतबार
ख़ुदा की ख़्वाहिश व तमन्नाओं से मत करो इंकार
ख़ुदा की रज़ामंदी से सारे के सारे पूरे होंगे क़रार
मेरे महबूब मुझे मत करो इतना बेबस और लाचार

मुहब्बत में नादानियाँ

कहीं ज़हर न हो जाये हमारी ये मुहब्बत और मधुर प्यार
मधुर मिलन व मुलाक़ातें न हो जाये ख़न्जर और तलवार
इज़्जत आबरू का सरमाया न हो जाये बर्बाद और बेकार
बेख़ुदी में दिल और दिमाग़ न हो जाये बेबस और बेज़ार

मनोकामनायें

हमारे हसीन सपने बहुत जल्दी ही होगें साकार
हमारी मधुर मुहब्बत शीघ्र लेगी ख़ूबसूरत आकार
हमारी मुहब्बत का सफ़र ताउम्र रहेगा ख़ुशगवार
हम दोनों एक दूजे के लिये हमेशा रहेगें वफ़ादार

मुहब्बत के इत्मिनान

अपनी निर्मल और पवित्र मुहब्बत पे मुझे है गरूर
आपकी मुहब्बत में हर वक़्त रहता हूँ बेहद मगरूर
दिल दिमाग़ में रहता है हसीन गुफ़्तगू का सुरूर
ख़्वाब और ख़याल एक दिन हक़ीकत होंगे ज़रूर

मुहब्बत के इत्मिनान

एक दूसरे के हालात को समझें और बनें समझदार
एक दूजे के दर्दों ग़म को कम करते रहेंगे लगातार
एक दूजे के लिये हमेशा रहें वफ़ादार औ ईमानदार
ज़िन्दगी का सफ़र हमेशा रहे मजेदार व ख़ुशगवार

---

1. सरमाया=जमा पूँजी **2.** बेख़ुदी=बेख़बर **3.** बेज़ार=उदास

मुहब्बत के अहसास

हमें समझने होगें एक दूसरे के अहसास व जज़्बात
मिलन की चाहत में करते रहें एक दूजे से मुलाक़ात
एक दूजे के दिल व दिमाग़ में हमेशा रहें ख़यालात
हमारा फलसफ़ा यह हो कि ज़रूर होंगे शरीके हयात

मुहब्बत के जज़्बात

तमन्नाओं और ख़्वाहिशों को देते रहेंगे मनमाफ़िक आकार
दिलो दिमाग़ में ख़्वाबों को करते रहेंगे मनमर्जी से साकार
ख़्वाबों ख़यालों में तसव्वुर करते रहेंगे ख़ूबसूरत व मज़ेदार
हक़ीकत से ज्यादा कल्पनायें होती हैं हसीन औ ख़ुशगवार

विरह की वेदना

बेचैनी औ बेक़रारी में तन और मन तड़पता होगा
ज़ालिम वक़्त करवटें बदलकर कैसे गुज़रता होगा
मधुर मिलन की प्यास में तन बहुत झुलसता होगा
अग्न सा तपता हुआ बदन ठण्डी आहें भरता होगा

---

1. फलसफ़ा=चिन्तन **2.** शरीके हयात=जीवन साथी

दीनो ईमान

मैं आप के तन-मन का सम्पूर्ण संसार हूँ
मैं हर हालात में आपके लिये वफ़ादार हूँ
हमेशा आपके लिये बेहद ही ईमानदार हूँ
आप के लिये कुछ भी करने को तैयार हूँ

मज़बूरियाँ

रस्मों और रिवाज़ों से बेहद लाचार हूँ
मैं भी मिलने के लिये बेहद बेक़रार हूँ
मैं ख़ुद अपने आपसे भी बेहद बेज़ार हूँ
हसीन बाँहों में समाने के लिये तैयार हूँ

चाहत और क़शिश

मेरे आगोश में समा कर बातें करने को मन करता होगा
तूफ़ानी सर्द रातों में बदन बर्फ़ की तरह से जमता होगा
मिलन की चाहत में बदन सोलह शृंगार से संवरता होगा
बेक़रार तन औ मन में प्यार पाने का ख़ुमार रहता होगा

बेक़रार लम्हे

विरह की व्याकुल वेदना में मन बहुत विचलित रहता होगा
दो बेबस बदन एक जान होने के लिये बेहद तड़पता होगा
ख़यालों में मेरी यादों का ही अक़्स औ तसव्वुर रहता होगा
ख़्वाबों में मेरा आशियाना ही हर पल आँखों में बसता होगा

हसीन ख़यालात

मेरा प्यार पाने के लिये चेहरा कमल सा खिलता होगा
मेरी बाँहों में समाने के लिये बेचैन दिल मचलता होगा
मुहब्बत का गहरा सागर तन औ मन में उफनता होगा
रग-रग में मेरे प्यार का दरिया सारी रात बहता होगा

ख़ूबसूरत जज़्बात

रसीले गुलाबी होंठों में प्यार का प्याला भरता होगा
ख़्वाबगाह में हर तरफ मेरा ही अक़्स दिखता होगा
मुझ से जुदा रहने का भी बेहद मलाल रहता होगा
मेरा ख़याल ही चैन व सुकूँ का ज़वाब बनता होगा

बेख़ुदी के आलम

मेरा तन और मन भी तो विरह में बदहाल है
मेरा दिल और दिमाग़ भी तन्हाई में बेहाल है
मेरे ख़यालों में हर पल आपका ही ख़याल है
किसी भी तरह से साथ में रहने का सवाल है

महबूब का ऐतबार

मेरे आशियाने में हर पल आपका ही अहसास है
मेरे दामन में आपके प्यार का सम्पूर्ण विश्वास है
मेरे बेक़रार व बेचैन जज़्बात को आपकी आस है
मेरे ज़हन में आप के साथ ही रहने की प्यास है

मुहब्बत के अहसास

मैं हर वक़्त आपके ही आस-पास रहता हूँ
आपकी यादों के सहारे ही ज़िन्दा रहता हूँ
मैं बेबस,लाचार और मज़बूर ज़रूर रहता हूँ
मगर किसी भी तरह से बेवफ़ा नहीं रहता हूँ

---

1. ख़्वाबगाह=शयन कक्ष

आपके बिना

मुझसे मत रहा करों इस तरह से बेज़ार
मेरा तन-मन इतना हो जाता है बेक़रार
अश्क़ों के दरिया बहने लगते हैं बेशुमार
बदहाल हो जाता है मेरा चैन औ क़रार

नादान इश्क़

माना कि मुझमें है बहुत सारी ऐसी नादानियाँ
प्यार निभाने के लिये ज़रूरी है यह निशानियाँ
हमारे प्यार की लिखी जायेगीं मधुर कहानियाँ
चाहे कैसी और कितनी भी आयेगीं परेशानियाँ

अमर प्यार

इस वक़्त हमारे सामने है बेहद मज़बूरियाँ
रस्म औ रिवाज़ की है ज़ालिम लाचारियाँ
प्यार को मिटा न सकेगी यह कमजोरियाँ
एक दिन ख़त्म होगी मुलाक़ात की दूरियाँ

महफ़ूज़ मुहब्बत

हमारे प्यार की कभी नहीं होगी बदनामियाँ
हमेशा के लिये ज़रूर दूर होगी नाक़ामियाँ
हमें ज़रूर मिलेगी ख़ुदा की ये मेहरबानियाँ
ज़ालिम जमाने की नहीं चलेगी मनमानियाँ

वज़ूद के लिये

प्यार में क़शिश और मिलन की लौ जलाये रखना
जोश और जुनून का नूर दिल को दिखाये रखना
अहसास और जज़्बात के रोग़न को बनाये रखना
दीया औ बाती के पाक़ रिश्ते को समझाये रखना

मुहब्बत के लिये

बेवफ़ाई की तेज आँधियों से ऐतबार को बचाये रखना
वफ़ा की रोशनी से वादे औ इरादों को निभाये रखना
चराग़ों का फलसफ़ा ख़्वाबो ख़यालों को बताये रखना
दिल औ दिमाग़ में जगमगाती यादों को समाये रखना

---

1. नूर=प्रकाश **2.** रोग़न=तेल

ऐतबार के लिये

मुमक़िन न हो अगर चिराग़े मुहब्बत को जलाये रखना
यादों के जुगनुओं को ख़यालातों में झिलमिलाये रखना
काली रात में भी नूर से मिलन की आस लगाये रखना
भूली बिसरी मुलाक़ातें तारों के जैसे टिम टिमाये रखना

मुहब्बत के लिये

अमावस में उम्मीद की लालिमा को दिल में सजाये रखना
तपते सहरा में अपनेपन की शीतल चाँदनी बिछाये रखना
प्यार आबाद रहे दिल में, समझ की बादे सबा बहाये रखना
ऐतबार के लिये अपने जज़्बात का अहसास कराये रखना

प्यार ही सब कुछ

उसके पल-पल मेरी नज़र में है
इस तरह से वो मेरी ख़बर में है
सिर्फ़ उसकी यादें औ मुलाक़ातें
मेरी ज़ीस्त के हसीं सफ़र में है

---

1. सहरा=रेगिस्तान **2.** बादे सबा=सुहावनी हवा

प्यार के बिना

जब भी वो मज़बूरी से अगर में है
मेरा चैनो सुक़ून फिर मगर में है
उसके जुदा होने का वक़्त 'साथी'
मेरे लिये क़यामत औ ज़हर में है

प्यार का वजूद

मेरी जन्नत वहीं पर ही बसर में है
जिन ग़लियों से ही वह गुज़र में है
वह इस तरह रहता मेरी रग रग में
दरिया का वजूद जैसे समन्दर में है

नादान इश्क़

मुझको क्यों उस पर इतना ज़्यादा गुमान है
जो गैरों के लिये मुझ से इस तरह अन्जान है
जो मुझ पर गुज़रती है वो तो मैं ही जानता हूँ
उसके तो लिये बहाने बनाना बहुत आसान है

1. ज़ीस्त=ज़िन्दगी

बेवफ़ा महबूब

प्यार के अहसास-जज़्बातों से जो बेज़ान है
यक़ीनन वह महबूब तो नहीं सिर्फ़ नादान है
अपनी सहुलियत के मुताबिक मुझसे मुहब्बत
मेरा प्यार उसके वक़्त बिताने का सामान है

बिना ऐतबार

वह शक़ और शिक़ायत का शिकार है
दिल और दिमाग़ से तो वह बीमार है
वह ग़लतफ़हमी औ ख़ुदग़र्ज़ी में रहता
उसके मन में तो नफ़रतों का बुख़ार है

नासमझ इश्क़

गिले व शिक़वे से कहाँ ज़िंदा प्यार है
मुहब्बत में तो सिर्फ़ व सिर्फ़ ऐतबार है
तू-तू, मैं-मैं, से तो कुछ भी नहीं हासिल
बहस के वक़्त चुप रहे वो समझदार है

नादान महबूब

वह मेरी बेपनाह मुहब्बत को मेरी कमजोरी समझता है
मेरे दिली जज़्बातों और अहसासों की तौहीन करता है
लाख समझाता हूँ प्यार के लिये अच्छा बुरा क्या होगा
मगर वह नासमझ औ नादान मेरी क्यों नहीं मानता है

नासमझ मुहब्बत

ख़्वाबों व ख़यालों की क़द्र से प्यार हमेशा महकता है
प्यार ख़न्ज़र से नहीं ज़लालत औ बेरूख़ी से मरता है
नामुमक़िन भी मुमक़िन हो जाता है प्यार व मुहब्बत से
मगर वह नादान नफ़रत की आग में बेवज़ह जलता है

प्यार क्या नहीं है

तुम मेरे लिये बसन्त के मधुमास हो
जज़्बातों व ज़रूरतों के अहसास हो
दिल औ दिमाग़ में पूर्ण विश्वास हो
मिठास और क़शिश की आभास हो

प्यार की सब कुछ

चाहत और मिलन की आस हो
मेरे तन-मन के लिये प्यास हो
तुम मेरे अरमानों की तलाश हो
ख़्वाबों की ताबीर का प्रयास हो

ख़ूबसूरत अहसास

तुम मेरे मन की वीणा के संगीत हो
मेरे सतरंगी जीवन के इन्द्रधनुष हो
मेरे सुनहरे सपनों का स्वप्नफल हो
मेरे दिल में खिलता हुआ कमल हो

प्यार का विश्वास

हताशा और निराशा के वक़्त की आशा हो
मेरी रग रग में बहती हुई प्रेम की धारा हो
मेरे गीत व कविता की साकार कल्पना हो
शजर के सफ़र का मुक़म्मिल फलसफ़ा हो

---

1. ख़्वाबों की ताबीर=स्वप्न फल

जीवन का सार

मेरी साँसों में प्राणों का संचार हो
तुम मेरे लिये सुक़ून का क़रार हो
तुम मेरे दिली प्यार की तलाश हो
तुम मेरी तमन्नाओं का आकार हो

तुम क्या नहीं हो

ख़ुश्बू की तरह ख़ुशी की महक हो
हरियाली की तरह आबाद यादें हो
तुम मेरे लिये जीने का मक़सद हो
मुलाक़ात औ मिलन की क़शिश हो

ख़ूबसूरत लम्हें

हसीन रातों की महकती रातरानी हो
कल कल करते झरने की रवानी हो
पूनम की चाँदनी की तरह सुहानी हो
निर्मल औ पवित्र प्रेम की कहानी हो

साजन का अहसास

मेरे आँगन में भँवरे का गुन्जन हो
शरद ऋतु की सुहावनी सुबह हो
शजर की शीतलता का चिंतन हो
मन की वीणा का मधुर संगीत हो

मन का संसार

मेरे सतरंगी जीवन का इन्द्रधनुष हो
मेरे दिल में खिलता हुआ कमल हो
सागर में हिलोरे लेती हुई लहर हो
गुलशन में परिन्दों की चहचाहट हो

मन का मीत

मेरी साँसों में प्राणों का संचार हो
रोशनी से जगमग सुन्दर शाम हो
मेरे अरमानों की सम्पूर्ण तलाश हो
सपनों के स्वप्नफल का प्रयास हो

मन का संसार

तुम रग-रग में बहती हुई धारा हो
मेरे गीत व कविता की कल्पना हो
मेरे सुनहरे सपनों का फलसफ़ा हो
मेरे प्यार के समंदर की सफीना हो

तुम क्या नहीं हो

तुम मेरे ईमान के लिये इबादत हो
ज़िन्दगी के सफ़र की ज़ियारत हो
प्रेम के लिये ज़माने से बग़ावत हो
बेख़ुदी में अपने आपसे अदावत हो

तौहीने मुहब्बत

मेरे प्रेम को बेमौत मरने के लिये
ख़ुशियों को ख़त्म करने के लिये
तन्हाईयों में आँसू बहाने के लिये
दर्दनाक़ ख़ुदकुशी करने के लिये

प्यार की ख़ुदकुशी

ज़िन्दगानी को ग़मगीन करने के लिये
जुदाई के दर्दो ग़म में जलने के लिये
आशियाने को श्मशान बनने के लिये
मेरे जज़्बातों को दफ़्न करने के लिये

प्यार का क़त्ल

अपनी इंसानियत औ मानवता के सामने
अपने पवित्र और निर्मल प्यार के सामने
अपनों के विश्वास औ मुहब्बत के सामने
अपने अभिमान और स्वाभिमान के सामने

प्यार की ज़लालत

अपने परमपिता परमेश्वर के सामने
अपनी वफ़ा औ शराफ़त के सामने
अपने सच और हक़ीकत के सामने
अपनी इबादत औ ईमान के सामने

दीवानगी के मन्ज़र

अब तो तन्हाई के लिये मैं एक तहख़ाना हूँ
शमा पर मचलने के लिये मैं एक परवाना हूँ
उसको ख़बर है बेपनाह दीवानगी के हालात
उसके बेवफ़ा प्रेम के लिये मैं एक दीवाना हूँ

ख़ुदकुशी के लिये

तुम्हें हैवान और शैतान होना ही होगा
तुम्हें हैरान औ परेशान होना ही होगा
हमेशा के लिये बेमौत मरना ही होगा
तुम्हें अब तो अलविदा होना ही होगा

बेइन्तहा इश्क़

रस्मों और रिवाज़ों से भी वह लाचार है
मुहब्बत के लिये फिर भी तो इज़हार है
वो दुश्मन है ख़ुद अपने तन व मन का
अपने आप से भी वो इस तरह बेज़ार है

चाहत के सबूत

हर वक़्त मेरा ख़याल ही दीदारे यार है
हर तरफ मेरा अक़्स ही विसाले यार है
विरह की व्याकुल वेदना में भी प्यार है
हमसफ़र साथ हो तो ख़ुशियाँ हज़ार है

ज़ालिम जुदाई

मिलने के वक़्त तय फिर भी बेक़रार है
उसे इस तरह से मेरा बेहद इंतज़ार है
दिल और दिमाग़ में बेख़ुदी का आलम
यक़ीनन उसको बेइन्तहा मुझसे प्यार है

मुहब्बत की तासीर

शैतान भी मुहब्बत की ज़ुबाँ को समझता है
प्यार से पत्थर दिल इन्सान भी पिघलता है
मुहब्बत में तासीर और क़शिश इतनी 'साथी'
ग़मगीन और उदास तन मन भी संवरता है

---

1. दीदारे यार=महबूब का दर्शन **2.** विसाले यार=महबूब का मिलन **3.** अक़्स=प्रतिबिम्ब

मुहब्बत की क़शिश

रुसवाईयों में भी ऐसा दीवाना बना रहता है
मज़बूर होकर भी प्यार को इतना चाहता है
मुहब्बत में वादे औ इरादों की ईमानदारी से
महबूब कयामत के वक़्त भी साथ चलता है

बेकरार इश्क़

मुहब्बत पाक़ हो जाये मुझको तड़पने दो
चाहत बेहिसाब हो जाये मुझे तरसने दो
एकसार होने के लिये ऐसा बेक़रार हूँ कि
मुलाक़ात के वक़्त तन मन से पिघलने दो

महबूब की तमन्ना

जल कर खाक़ होना है मुझे मचलने दो
दीवाना बहुत बेताब है उसको जलने दो
मुझे उसकी लाश से लिपट कर रोना है
मेरे तन औ मन को अब तो बिखरने दो

प्यार का वजूद

मुहब्बत क्या है इसमें ज़माने को उलझने दो
मुहब्बत क्या नहीं होती है ये हमें समझने दो
मुहब्बत को अज़र और अमर करने के वास्ते
हमें भी हीर-राँझा और राधा-कृष्ण बनने दो

प्यार का अहसास

मेरे दर्द औ ग़मों की एक वो ही दवा है
दिल की हर एक साँस में वो ही हवा है
हर वक़्त रहता है महबूब मेरे ख़यालों में
फिर कैसे वह मेरे तन व मन से जुदा है

आख़िरी ख़्वाहिश

सिर्फ़ औ सिर्फ़ मेरी तो एक यही दुआ है
मेरा महबूब ही मेरे लिये तो बस ख़ुदा है
इश्क़ में एक दिन सब तबाह हो जायेगा
दिले नादाँ फिर भी तो उस पर फ़िदा है

इज़हारे मुहब्बत

चाहत और क़शिश ने प्रेम की मधुर धुन बजाई है
मज़बूर होकर एक दूजे ने दिल की बात बताई है
अब तो महकेगा हमारे पावन प्यार का आशियाना
हमेशा के लिये हमने अब तो राग प्रीत की गाई है

मिलन की आरज़ू

बेबस व बेचैन होकर जबसे आँखें हमने मिलाई है
अधजगी औ बेक़रार रातें ही इन्तज़ार में बिताई है
बहुत समझाया हमने विचलित व व्याकुल मन को
बेबस होकर एक दूजे ने विरह की वेदना सुनाई है

मन्जिले मक़सूद

एक साथ जीने व मरने की रस्में और कसमें निभाई है
प्यार को अजर-अमर करने की हिम्मत अब दिखाई है
हमने समझकर एक दूजे की निर्मल व पवित्र भावनायें
सोच समझ कर जीवन साथी बनने की सोच बनाई है

हमराही के ऐतबार

श्रद्धा, विश्वास और हमदर्दी अब हमारे दिल में समाई है
मधुर मिलन के प्रयास और आस की उम्मीद जगाई है
हर पल हमें सिर्फ़ व सिर्फ़ एकदूजे का अहसास रहेगा
तन-मन में अब एक दूजे की चाहत व क़शिश समाई है

मधुर मिलन

जब दिल से दिल न मिले तो प्यार क्या है
बिना प्यार के साथ रहने का क़रार क्या है
वक़्ते जुदाई बहता न हों अश्क़ों का दरिया
मुलाक़ातों के वक़्त फिर विसालेयार क्या है

मज़बूरियाँ

एक-एक पल में सदियों का बेक़रार क्या है
महबूब से मुलाक़ात का ऐसा इंतज़ार क्या है
तन और मन से जब तक बदहाल न हो जाये
दीवानगी में दिल और दिमाग़ लाचार क्या है

विरह की वेदना

मेरी चाहत में वो बेक़रार होकर हज़ारों बार रोया है
मुहब्बत के लिये कई बार सिसकियाँ लेकर सोया है
जब जब भी उसको दिल और दिमाग़ से सताया है
ख़ुद अपना चैन व सुकूँ ही बेक़रार हो कर खोया है

प्यार का असर

महके हुये आशियाने में सतरंगी ख़ुशियों को पाया है
प्यार के रंग में जब अपने तन व मन को भिगोया है
अश्क़ों का सागर इस क़दर जो आँखों में समाया है
जुदाई और तन्हाई में आँसुओं का समन्दर बहाया है

मुहब्बत की हिफाज़त

अब तो हमसे सितमग़र ज़माना भी बेहद घबराया है
मुहब्बत के वादों व इरादों को जब हमने दिखाया है
अब तो हमें ही ख़ुद प्यार को महफूज़ करना होगा
वर्ना इस ज़माने में कौन किसके कब काम आया है

मुहब्बत का सरमाया

मुहब्बत में सिर्फ़ और सिर्फ़ इतना सा ही कमाया है
प्यार, वफ़ा और चाहत का ख़जाना बेशुमार पाया है
हमारा प्यार अब तो सोने से कुन्दन हो गया 'साथी'
ऐतबार, दीन और ईमान से ख़ुद अपने को तपाया है

चाहत और क़शिश

जुदा होते वक़्त मेरी जान निकल जाती है
मुलाक़ात के वक़्त ही फिर वापस आती है
इसको ही कहते हैं पहली नज़र का प्यार
अज़नबी सूरत दिल को दीवाना बनाती है

मुहब्बत का असर

चाहत औ क़शिश दिल में आग लगाती है
जुदाई और तन्हाई तन मन को जलाती है
दिल में क़शिश, बेचैनी और बेक़रारी हो तो
ख़ुद अपने आप ही रुह गीत गुनगुनाती है

ऐतबार

अपनी मुहब्बत पे करो ऐतबार
अच्छे वक़्त का करो इन्तज़ार
हमारे जीवन में आयेगी बहार
हमारा प्रेम महकेगा सदाबहार

ज़ियारत

मेरे दिल व दिमाग़ की आत्मा
मेरे तन और मन के परमात्मा
गिले औ शिक़वे दूर करके ही
हमारी अना का करेगें खात्मा

चिन्तन

दो बदन होकर रहेंगे एक ज़ान
ज़माने में होगा हमारा सम्मान
हमारे प्यार का ऐसा है ईमान
दीवानों की नज़र में हो शान

हमसफ़र

वीणा का मधुर साज व संगीत होगा
जज़्बात औ अहसास का गीत होगा
हमारी बेशुमार चाहत और क़शिश में
हर वक़्त साथ में मन का मीत होगा

समझ

ख़ुद को इतना मत करो बेक़रार
बेआबरू न हो जाये हमारा प्यार
रस्म व रिवाज़ से हम हैं लाचार
एक दिन ज़रूर होगा चैनो क़रार

ख़ुशहाल प्यार

हर हाल में एक दूजे पर विश्वास होगा
एक दूजे को ख़ुश करने का प्रयास होगा
इश्क़ के ताने बाने में शुद्ध कपास होगा
हमारी क़ोशिशों से ज़माना निराश होगा

मुहब्बत के इत्मिनान

किसी दिल के तसव्वुर का इबादत हो जाना
उसकी यादों का आशियाँ ज़ियारत हो जाना
उसके लिए सारे ज़माने से अदावत हो जाना
ख़ास अपनों से उसके लिए बग़ावत हो जाना

मनोकामना

किसी का ख़ुदा से इबादत में वरदान हो जाना
दिल के मन्दिर में उसका ही भगवान हो जाना
ख़्वाबों औ ख़यालों में उसका अरमान हो जाना
उसकी मुहब्बत और चाहत ही ईमान हो जाना

मन्जिले मक़सूद

किसी से मुलाक़ाते और गुफ़्तगू लाज़वाब हो जाना
उससे मिलने की आरज़ू औ तमन्ना ख़्वाब हो जाना
ताउम्र के सारे सवालों का एक ही जवाब हो जाना
सुख़नवर की शायरी का मुक़म्मिल किताब हो जाना

मुहब्बत के सबूत

किसी अजनबी की सूरत पे इत्मिनान हो जाना
उसकी दीवानगी में दिल का नादान हो जाना
आशियाँ उसकी यादों का ही अरमान हो जाना
तन–मन में उसके अक़्स का निशान हो जाना

प्यार क्या नहीं है

हताशा और निराशा के वक़्त की आशा हो
मेरी रग रग में बहती हुई प्रेम की धारा हो
मेरे गीत व कविता की साकार कल्पना हो
शजर के सफ़र का मुक़म्मिल फलसफ़ा हो

प्रेम का संसार

ख़ुश्बू की तरह ख़ुशी की महक हो
हरियाली की तरह आबाद यादें हो
तुम मेरे लिये जीने का मक़सद हो
मुलाक़ात औ मिलन की क़शिश हो

---

1. गुफ़्तगू=बातचीत **2.** सुख़नवर=कवि **3.** मुक़म्मिल=सम्पूर्ण **4.** शजर=पेड़ **5.** फलसफ़ा=चिन्तन

मुहब्बत का चिन्तन

मेरे सतरंगी जीवन का इन्द्रधनुष हो
मेरे दिल में खिलता हुआ कमल हो
सागर में हिलोरें लेती हुई लहर हो
गुलशन में परिन्दों की चहचाहट हो

मन का संसार

मेरी साँसों में प्राणों का संचार हो
रोशनी से जगमग सुन्दर शाम हो
मेरे अरमानों की सम्पूर्ण तलाश हो
सपनों के स्वप्नफल का प्रयास हो

मुहब्बत का सुरूर

हमारी मुहब्बत हमदर्दी का मयख़ाना है
एक दूजे को वफ़ा का जाम पिलाना है
प्यार में एक दूसरे का साथ मस्ताना है
ख़ुशियों से आबाद हमारा आशियाना है

मुहब्बत का फलसफ़ा

सितमग़र व ज़ालिम ऐसा ज़माना है
मुहब्बत के लिये हर कोई बेग़ाना है
हमें वादों और इरादों को दिखाना है
निर्मल औ पवित्र प्यार को बनाना है

मुहब्बत का ऐतबार

हमारा प्यार पवित्र दिलों की अमानत है
बेगुनाही के लिये सबूतों की ज़मानत है
मुहब्बत के दीनो ईमान की ज़ियारत है
मिसाल के लिये दीवानगी में इबादत है

मुहब्बत के जोशो जुनून

हम भी एक दिन ज़रूर होगें कामयाब
हमारा प्यार ज़माने में रहेगा लाज़वाब
सुहानी चाँदनी रातों में होगा माहताब
प्यार रोशन होगा जैसे होता आफ़ताब

चाहत और क़शिश

विरह में हो रही जो व्याकुल वेदना है
कुंदन होने के लिये सोने को तपना है
पत्थर दिल ज़माने को भी पिघलना है
निर्मल औ पवित्र होकर हमें मिलना है

यादगार मुहब्बत

जो अजर औ अमर रहता है वो दीवाना है
जन्नत में जो रहता प्यार में वो मस्ताना है
चाहत व क़शिश में ख़ाक हो वो परवाना है
दिल को सुक़ून मिले प्यार का वो तराना है

दास्ताने मुहब्बत

माना कि मुझ में है बहुत सारी ऐसी नादानियाँ
प्यार निभाने के लिये ज़रूरी है यह निशानियाँ
हमारे प्यार की लिखी जायेगी मधुर कहानियाँ
चाहे कैसी और कितनी भी आयेगीं परेशानियाँ

अजर अमर प्रेम

प्यार में क़शिश और मिलन की लौ जलाये रखना
जोश और ज़ुनून का नूर दिल को दिखाये रखना
अहसास और जज़्बात के रोग़न को बनाये रखना
दीया औ बाती के पाक़ रिश्ते को समझाये रखना

समझदार प्यार

हमारे प्यार की कभी नहीं होगी बदनामियाँ
हमेशा के लिये ज़रूर दूर होगी नाक़ामियाँ
हमें ज़रूर मिलेगी ख़ुदा की ये मेहरबानियाँ
ज़ालिम ज़माने की नहीं चलेगी बेईमानियाँ

यादगार मुहब्बत

मुमक़िन नहीं हो अगर,चराग़े मुहब्बत को जलाये रखना
यादों के जुगनूओं को ख़यालातों में झिलमिलाये रखना
काली रात में भी नूर से मिलन की आस लगाये रखना
भूली बिसरी मुलाक़ातें तारों के जैसे टिम टिमाये रखना

विरह की वेदना

मेरा तन औ मन बहुत बेचैन है
मेरा दिल औ दिमाग़ बेकरार है
मन विरह-वेदना से व्याकुल है
मेरे प्रेम गीत बहुत ही उदास है

महबूब के बिना

ख़ुशहाल सफ़र का तो पूर्णविराम है
आँसुओं की बरसात अब बेलगाम है
आँगन में जवान मौत सा मातम है
तुम्हारे बिना अब जीना भी हराम है

बेख़ुदी का आलम

मेरी ख़ामोश आँखों में रतजगी भोर है
तन्हाईयों में तुम्हारी यादों का शोर है
लगातार बहते हुये अश्कों का दौर है
विचलित मन पर चलता नहीं जोर है

मन का संसार

मन में नाचता मिलन का मोर है
दिल में हमेशा रहता चितचोर है
यादों का ओर है न कोई छोर है
मन में चाहत की घटा घनघोर है

बदहाल प्यार

मुहब्बत की दरिया उफान पर है
जज़्बातों की लहरें तूफ़ान पर है
दिल को चैन औ सुक़ून कहाँ से
तन्हाईयाँ ख़तरे के निशान पर है

समझदार प्यार

प्यार का अहसास करने के लिये
ग़लतियों को माफ़ करने के लिये
दिल को पाक़ साफ़ करने के लिये
झूठ व सच में फ़र्क करने के लिये

समझदारी

नादानियों को भूलने के लिये
मन को निर्मल करने के लिये
तन को पवित्र करने के लिये
जज़्बात को समझने के लिये

बेगुनाह प्यार

नापाक़ हरकत से बचने के लिये
दुनियादारी को समझने के लिये
हकीक़त के साथ जीने के लिये
अपनों से इन्साफ़ करने के लिये

ईमानदार प्यार

हक़ीक़त में वही तो चाहता है
जो कुछ भी तो नहीं चाहता है
जो सब कुछ पाना चाहता है
वही कुछ देना नहीं चाहता है